भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 | अगस्त 2010 | अंक 8

वाराणसी में मुंशी प्रेमचंद जयन्ती के अवसर पर आयोजित समारोह

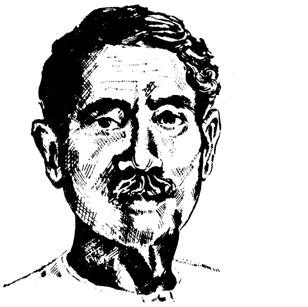

मुंशी प्रेमचंद लमही महोत्सव में मुशायरा एवं कवि सम्मेलन

''मेरी निगाहों में वो शख्स आदमी भी नहीं, जिसे लगा है जमाना खुदा बनाने में'' शायर राहत इन्दौरी का यह मायनेखेज शेर यह बताने को काफी था कि 30 जुलाई को मुंशी प्रेमचंद जयन्ती के अवसर पर सांस्कृतिक संकुल में आयोजित लमही महोत्सव के मुशायरे की रात ने अदब की किन बुलन्दियों को चूमा।

मशहूर शायर राहत इन्दौरी ने कहा—''महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद अपनी लेखनी से लमही गाँव से निकलकर सारी दुनिया में छा गए। उन्हें भाषाई जुबान में बाँटना उस महान फनकार की तौहीन है। यह कहना गलत है कि मुंशीजी सिर्फ हिन्दी के कहानीकार हैं। उर्दू वालों की बहुत बड़ी कमी है कि वे उर्दू में अनुवाद किए हुए मुंशी जी के उपन्यास को बहुत कम पढ़ते हैं। **गुजारिश है कि अपने बच्चों को मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास जरूर पढ़ने के लिए प्रेरित करें। उनमें एक सन्देश होता है। वे पैगाम आने वाली पीढ़ी पर असरदार साबित होंगे।**''

उर्दू अदब के जाने-माने शायर गौहर कानपुरी ने पुरखों को याद करते हुए कविता पढ़ी ''जो लोग गोश-ए-दिल में कयाम करते हैं, वो मरके खाक में मिलते हैं न पानी में, मैं प्रेमचंद को मरहूम नहीं लिख सकता, वो अब भी जिन्दा हैं हर एक कहानी में।''

मुंशीजी ने नेहरू तक पहुँचाया मजलूमों का दर्द

वर्ष 1930 में काशी में जमी साहित्यकारों की गोष्ठी में हुआ था सामना

मौका श्रेय हथियाने और अपनी करनी गाने का हो और कोई मजलूमों में रम जाए। वह भी जब स्वतंत्रता

शेष पृष्ठ 2 पर

ये दाग़-दाग़ उजाला....

ये कारुणिक उद्‌गार गूँजे थे—अब से 63 साल पहले। आज़ादी के प्रथम प्रभात को लक्ष्य करते हुए कवि-कंठ फूट चला था, वह उत्सव नहीं मना रहा था बल्कि रो रहा था मानवता के नरमेध पर। आज स्वतंत्रता की 64वीं वर्ष-ग्रंथि पर पुन: आक्रान्त कर रही है इन शब्दों की अनुगूँज। इतने वर्षों की विकास-यात्रा के बाद भी आखिर कहाँ खो गये हैं हमारे चिर-संचित मानव-मूल्य?

पिछले दिनों टेलीविज़न के किसी चैनल के हास्य-कार्यक्रम (लाफ्टर शो) में हास्य-कविताओं द्वारा अभिनय-परक मनोरंजन किया जा रहा था जिसके आमंत्रित निर्णायक ठहाके भी लगा रहे थे। किन्तु वहाँ न हास्य था, न कविता, केवल तुकबंदी थी जो प्रतिस्पर्धात्मक होने के कारण अश्लील अंग-विन्यास का दायरा भी लाँघ रही थी। आखिर हमने चैनल बदलना शुरू किया पर मन विक्षुब्ध हो उठा था और हम सोच रहे थे कि क्या है साहित्य का भविष्य और क्या होगा भविष्य का साहित्य?

बाज़ार को ही सर्वव्यापी ईश्वर समझे बैठे लोग पूँजी के बल पर जिस सत्यानाशी संस्कृति की संरचना कर रहे हैं उसके सामाजिक प्रभाव कितनी दूर तक जा चुके हैं यह आये-दिन की घटनाओं से ज़ाहिर भी होने लगा है। बाल-किशोर उम्र की कच्ची-मिट्टी इन्हीं विकृतियों की आँच में तपकर बंजर बनती जा रही है। इसी आयु-वर्ग का पहला तबका जो परीक्षा में अच्छे अंक लेकर, प्रतियोगिता से गुज़र कर अच्छी नौकरी और वेतनमान भी पा रहा है वह संवेदन-हीन और विकार-ग्रस्त है, भले ही वह बाज़ार के गुणा-गणित में कितना भी प्रवीण हो जाये किन्तु हम उसे संस्कार-दरिद्र, उदरम्भर विषयी-पशु ही कहेंगे।

दुनिया की सभी भाषाओं में, आरम्भ से अब तक जितना भी साहित्य रचा गया है और आज भी लिखा जा रहा है उसकी चिन्ता का केन्द्र है—मनुष्य। मनो-मस्तिष्कयुक्त यह मनुष्य ही सामाजिक-संघटन की पहली ईकाई है। यह मनुष्य मनन करता है, सर्जन करता है, निर्माण और ध्वंस करता है। इसी मनुष्य की आशा-आकांक्षा, प्रणय-संघर्ष, राग-द्वेष, घृणा-वितृष्णा, दु:ख-दारिद्र्य, विकार-वेदना, कुण्ठा-यातना जैसे सैकड़ों पारिस्थितिक-संचारी-भाव किसी स्थायी-भाव के हिस्से बनकर साहित्य में व्यक्त होते हैं। साहित्यिक-अभिव्यक्ति की इसी कशिश में कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि लिखे जाते हैं जो रचनाकार की संवेदना और अंतर्दृष्टि को युग-सापेक्ष स्तर पर व्यक्त करते हैं। चूँकि साहित्य का माध्यम भाषा है और यह भाषा सीधे संप्रेषित होकर व्यक्ति और समाज की सोच को प्रभावित करती है। अत: अभिव्यक्ति के दूसरे माध्यमों की तुलना में भाषिक-माध्यम महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

19वीं सदी के उत्तरार्ध में दार्शनिक-चिन्ता और साहित्य ने ही युग-युग का अन्धकार चीरते हुए हमें 'नवोन्मेष' (रेनेसाँ) का नव-विहान प्रदान किया, हमारी चेतना जागृत हुई, हमारे कण्ठ फूटे, स्वर निकले। 20वीं सदी की शुरुआत में ही औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के बंग-भंग कानून के खिलाफ एक महाकवि (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) चौराहे पर आ खड़ा हुआ और उसके स्वर में स्वर मिलाकर हमने उस कृत्रिम विभाजन का प्रबल-प्रतिरोध किया। यह थी

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

साहित्य की अन्त:शक्ति जिसने तत्कालीन हुकूमत को अपना फैसला वापस लेने पर विवश किया।

इसके समांतर हमारे स्वातंत्र्य-संघर्ष के बीच देश की सभी भाषाओं में उत्प्रेरक साहित्य लिखा गया। जिसमें आत्म-गौरव का बोध था, युगीन परिस्थितियों के बीच मानवीय-त्रासदी का विश्लेषण था, परिवर्तनकामी युवा पीढ़ी का आह्वान था। इस बीच हमारी भाषाएँ मँजती रहीं, अभिव्यक्ति के स्तर पर निखरती रहीं, उनमें नवीन प्रयोग होते रहे। औपनिवेशिक-दासता से मुक्ति की प्रक्रिया के बीच विभाजन की खूनी-त्रासदी के रक्तरंजित आलेख हमारी आज़ादी के प्रथम पृष्ठ बन गये। अंतत: उस धर्मांध-संघर्ष का करुण-पर्यवसान हुआ और आरम्भ हुआ राष्ट्रीय-प्रगति का योजनाबद्ध महायज्ञ।

इस समग्र राजनीतिक घटनाक्रम और सामाजिक-सांस्कृतिक उथल-पुथल के बीच भी मानवीय करुणा का इतिवृत्त लिखा जाता रहा, खण्ड-प्रलय के बीच भी मनुष्य को मिलता रहा साहित्य की संवेदना का संजीवन। वे साहित्यकार थे, पद-प्रतिष्ठा-पुरस्कार-सम्मान के प्रलोभन से दूर। वे रचनाधर्मी मनीषी थे जो अपने राष्ट्र का पुनर्निर्माण करने के लिए आत्म-बलिदान दे रहे थे, नयी पौध को अपने रक्त से सींच रहे थे।

इसी चिंतन-मनन, अनुभूति, संवेदन और सर्जना की साहित्य-प्रक्रिया में युगीन परिवर्तन की मंज़िलें तय करते हुए 20वीं सदी/दूसरी सहस्राब्दी बीत गयी। 21वीं सदी में प्रवेश के साथ अपनी समग्र मानवीय-विरासत और वैज्ञानिक-आविष्कारों के नवीनतम उपकरणों को सहेजकर हमने एक नये युग में कदम रखा। किन्तु तब तक परिदृश्य बदल चुका था, बाज़ार के शिकंजे में था मनुष्य और उसकी निम्नतम प्रवृत्तियाँ जिसे दृष्टि में रखकर मोल-तोल होने लगा। साहित्य-संस्कृति सौदेबाजों का खिलौना बन चले, पुरस्कार-सम्मानों की होड़ लग गयी और शुरू हो गया सांस्कृतिक-दुराचार।

इस परिदृश्य के ठीक विपरीत आज भी हमारी सभी भाषाओं के सजग रचनाकार पूरी निष्ठा से सांस्कृतिक-संरचना कर रहे हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में काफी-कुछ अच्छा लिखा जा रहा है जो 'प्रिण्ट मीडिया' में तो उपलब्ध है किन्तु आवश्यक है बेहतर रचनाओं का इलेक्ट्रॉनिक-प्रसार, तभी 'काउण्टर' किया जा सकता है बाज़ार का दुराचार। अन्यथा हर अँधेरी रात के बाद स्याह-उजालों में घिरा सोचता रहेगा कवि-मन—

ये दाग़-दाग़ उजाला, ये शब गुज़ीदा सहर
ये वो सहर तो नहीं, जिसकी आरज़ू लेकर
चले थे हम, कि मिल जायेगी कहीं-न-कहीं!

सर्वेक्षण

● **मुद्रा-चिह्न :** डॉलर, यूरो डॉलर आदि के समांतर अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में हमारी मुद्रा (रुपये) का मूल्य-मान भले ही बहुत पीछे हो लेकिन अपनी मुद्रा को एक प्रतीक-चिह्न में व्यक्त करते हुए हम गौरवान्वित हैं। विशेष यह कि तमिलनाडु के एक युवक ने नागरी-लिपि के 'र' अक्षर को लेकर इसकी डिज़ाइन की रचना की है, जिससे हमारी नागरी-लिपि की जन-स्वीकृति व्यक्त होती है। इस चिह्न के आकल्पक निश्चित ही हमारी बधाई के पात्र हैं।

●● **शर्मनाक :** हम कितने निर्लज्ज हो चले हैं इसकी बानगी सड़क पर ही नहीं, सदन में भी दिखलायी देने लगी है। पिछले पखवाड़े बिहार विधानसभा में जो कुछ हुआ उसे सिर्फ 'हंगामा' कहकर नहीं टाला जा सकता। ज़रूरी है कि कथित जन-प्रतिनिधियों के लिए लोक सेवा-आयोग की तरह समुचित प्रशिक्षण की व्यवस्था हो। जिसे पूरा करने के बाद ही उन्हें जनता के बीच/सदन में जाने का अवसर दिया जाय एवं अमर्यादित आचरण के लिए उनका चुनाव रद्द करने की प्रक्रिया अपनायी जाये। वरना हमारा वयस्क होता लोकतंत्र बार-बार शर्मसार होता रहेगा।

●●● **प्रलाप-विलाप-एकालाप :** प्राय: विभिन्न राष्ट्रीय समस्याओं पर नेतागण प्रलाप करते नज़र आते हैं और जनता विलाप करती रहती है। पिछले दिनों विदेश-मंत्री की पाकिस्तान यात्रा और वहाँ अपने समकक्ष से वार्ता के बाद जितना प्रलाप-विलाप हुआ उससे सभी वाकिफ हैं। संसद के मानसून-सत्र में महँगाई के मुद्दे पर विपक्ष के आक्रामक-विलाप और योजना-आयोग के उपाध्यक्ष, कृषिमंत्री, वित्तमंत्री आदि के आलाप के बाद माननीय प्रधानमंत्री का एकालाप गूँज उठा—'दिसम्बर से पहले महँगाई कम न होगी।' भले ही जनता भूखों मरे, सरकारी गोदामों के बाहर अनाज सड़ता रहे, सरकार को अपनी जी-डी-पी बढ़ती हुई दिखानी है अत: 'महँगाई कम न होगी' ध्यान रहे, इसी असंवेदनशील मानसिकता से उपजता है प्रतिहिंसक-प्रतिरोध—

आओ, भूखों मरने का सरंजाम करें
पहले मारें उनको, फिर खुद मरें!

—परागकुमार मोदी

आन्दोलन की अगुवाई कर रहा बड़ा नेता सामने बैठा हो। यह माद्दा वास्तव में मुंशी प्रेमचंद में ही था।

बात वर्ष 1930-31 की है। पण्डित नेहरू कांग्रेस की किसी बैठक में भाग लेने सपत्नीक काशी पधारे थे। इसका लाभ उठाते हुए साहित्यकारों की ओर से बाँसफाटक स्थित पं० रामानन्द मिश्र के मकान में संगोष्ठी आयोजित की गई। विषय रखा गया—राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यकारों की भूमिका। करीब दो घण्टे चली बैठक में साहित्यकारों ने अपनी भूमिका का पूरे जोश-खरोश के साथ बखान किया। इसके इतर हृदय में गरीबों-मजलूमों के दर्द का समंदर समेटे मुंशी प्रेमचंद बोले तो जुबान से किसानों और मजदूरों का दर्द ही निकला। इससे पण्डितजी के साथ ही उनकी पत्नी कमला नेहरू भी द्रवित हो उठीं। इस दौरान ब्रिटिश राज्य के शोषण और कुशासन पर गरमा-गरम बहस भी हुई थी। इससे भारी हुए माहौल को बेढब और रूद्रजी ने अपनी चुटीली कविताओं से हल्का किया था। इस बैठक के निष्कर्ष के आधार पर जयशंकर प्रसाद ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रीय स्वाभिमान और किसान-मजदूरों की व्यथा का उल्लेख किया है। गोष्ठी में सम्पूर्णानंदजी ने पं० नेहरू का स्वागत किया था। समाजसेवी तरुणकांति बसु ने बताया कि इस वाकये का पता एक चित्र से चला जिसे इन्दिरा गाँधी ने नेहरू मेमोरियल म्यूजियम को प्रदान किया था। इसका उल्लेख होने पर 1976 में जम्मू कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल लक्ष्मीकांत व गणेशदास ने इस ऐतिहासिक गोष्ठी का विस्तृत विवरण दिया।

दिवंगत विदेशी हिन्दी सेवी

—डॉ० भवानीलाल भारतीय

किसी भाषा और साहित्य को किसी देश की सीमा में बाँधे रखना उचित नहीं है। भारत की संस्कृत, प्राकृत तथा हिन्दी, बंगला, तमिल आदि वे भाषाएँ हैं जिनमें लिखने तथा साहित्य रचना करने में जितनी रुचि भारतवासियों ने दिखाई है वैसी ही रुचि अन्य देशवासियों ने भी दिखाई है। संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन-अनुशीलन करने वाले पाश्चात्य प्राच्य विदों की सूची काफी लम्बी है। इसमें यदि **प्रो० वेबर** और **मैक्समूलर** सदृश जर्मन विद्वानों का समावेश होता है तो **डॉ० मोनियर विलियम्स**, **मैकडॉनल** सदृश अंग्रेजों तथा **बॉरनफ** जैसे फ्रैंच विद्वानों की भी गणना होती है। यही बात भारतीय लेखकों पर भी लागू होती है जिन्होंने अंग्रेजी को अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। **सरोजिनी नायडू** सदृश कवयित्रियों, **मुल्कराज आनन्द, आर०के० नारायण, विक्रम सेठ** और **अनीता देसाई** जैसे अंग्रेजी में कथा साहित्य की रचना करने वालों को भुलाना भी कठिन है।

चार्ल्स विल्किंस (1750-1836) पहला अंग्रेज था जिसने सर्वप्रथम संस्कृत का अध्ययन किया। फारसी, बंगला तथा संस्कृत सीखी तथा भारतीय भाषाओं में पुस्तकें छापने के लिए प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। **विल्किंस** के मित्र **सर विलियम जोन्स** (1746-1794) ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल में सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश थे। उन्होंने भारतीय साहित्य के शोध एवं अध्ययन के लिए **ऐशियाटिक सोसाइटी** की स्थापना की तथा भारतीय साहित्य को प्रोत्साहन दिया।

एक ओर जहाँ हम इन प्राच्य विद्याविद् विद्वानों के योगदान का स्मरण करते हैं वहाँ हमारे जहन में एक और बात भी उभरती है। अंग्रेजों ने भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के अध्ययन, अनुशीलन में जो रुचि दिखलाई उसमें उनकी साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाएँ निहित थीं। जैसा कि **ऑर्थर एन्थनी मैकडानल्ड** ने अपने ग्रन्थ संस्कृत साहित्य का इतिहास में स्वीकार किया है, ''भारतीय भाषाओं की प्रामाणिक जानकारी हमारे देश के उन नौज़वानों को होनी चाहिए जो भारत के भावी शासक बन कर उस देश में जायेंगे।'' **सर मोनियर विलियम्स** ने अपने ग्रन्थ **इण्डियन विज्डम** में भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के ज्ञान को अपने ईसाई धर्म के प्रचार में सहायक बताया। तथापि यह स्वीकार करना होगा कि अधिकांश विदेशी विद्वानों का भारतीय साहित्य में रुचि दिखाना उनका विद्या व्यासंग ही सूचित करता है।

इसी प्रशासकीय आवश्यकता को अनुभव कर अंग्रेज शासकों ने सिविल सर्विस में नियुक्ति पाने वाले युवकों को भारतीय भाषाओं में प्रशिक्षित करने के लिए उपाय भी किये। नतीजतन भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता में **फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की गई और **डॉ० गिलक्राइस्ट** को इसका प्रिंसिपल नियुक्त किया। वस्तुत: **गिलक्राइस्ट** चिकित्सा शास्त्र के डॉक्टर थे किन्तु भारतीय भाषाओं व साहित्य में उनकी अत्यधिक रुचि थी। यही कारण है कि इस कॉलेज में हिन्दी तथा उर्दू के प्राध्यापक नियुक्त किये गये तथा भारतीय भाषाओं में स्तरीय ग्रन्थ लिखाये गये। **पं० लल्लूजी लाल** तथा **पं० सदल मिश्र** ने **प्रेमसागर** (भागवत की कथा का सार) तथा **नासिकेतोपाख्यान** (कठोपनिषद् की कथा पर आधारित) की रचना **फोर्ट विलियम** में अध्यापक रहते ही की थी।

आई०सी०एस० परीक्षा पास कर जो अंग्रेज भारत में उच्च पदों पर आये उनमें से कुछ की हिन्दी सेवाएँ स्मरणीय रहेंगी। एक ऐसे ही अफसर थे **एफ०एस० ग्राउस (फ्रैड्रिक सालोमन)** जो वर्तमान उत्तर प्रदेश के मथुरा तथा बुलन्द शहर जैसे जिलों में कलेक्टर के पद पर रहे। **ग्राउस** ने इन ज़िलों के प्रामाणिक गज़ेटियर बनाये तथा यहाँ की सांस्कृतिक-साहित्यिक गतिविधियों का विवरण एकत्र किया। उनका हिन्दी प्रेम इस दृष्टि से स्मरणीय है कि उन्होंने अंग्रेजी में 'रामचरितमानस' का प्रामाणिक गद्यानुवाद किया। कालान्तर में **पादरी एटकिंस** ने 'मानस' का समश्लोकी अंग्रेजी पद्यानुवाद किया जिसे दो खण्डों में हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस ने प्रकाशित किया। **एटकिंस** के इस अनुवाद की यह विशेषता है कि इसे 'मानस' की प्रचलित गायन पद्धति पर ही गाया या पढ़ा जा सकता है। **ग्राउस** के बारे में तो यहाँ तक प्रसिद्ध है कि वे अपने वार्तालाप में यथा प्रसंग मानस की चौपाइयों को उद्धृत करते रहते थे। एक ऐसा ही रोचक प्रसंग तब आया जब वे मथुरा के जिला मजिस्ट्रेट थे और उनके सामने वैरागी साधु को किसी अपराध के कारण पेश किया गया। जब ग्राउस ने उसे अपनी सफाई देने के लिए कहा तो उसने इतना ही कहा कि वह अपने पक्ष में कुछ खास कहना नहीं चाहता। उसने तो सबकुछ भगवान् पर छोड़ दिया है और चट मानस की यह चौपाई कह बैठा—

होइहैं वही जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावहिं साखा॥

ग्राउस साहब अपराधी के मनोभाव को समझ गये और मानस की भाषा में ही उसे उत्तर दिया—

कर्म प्रधान बिस्व करि राखा।
जो जस करहिं सो तस फल चाखा॥
अब वैरागी को मौन साधना पड़ा।

सिविल सर्विस के एक अन्य हिन्दी प्रेमी अधिकारी थे **फ्रैड्रिक पिन्काट** जो उन्नीसवीं शती में उच्चअधिकारी बन कर भारत आ गये थे। वे वर्षों तक बिहार में उच्च पदों पर रहे। शासकीय अनिवार्यता के कारण उन्होंने हिन्दी सीखी और हिन्दी के ही होकर रह गये। सेवा निवृत्त होने के पश्चात् वे इंग्लैण्ड चले गये किन्तु उनके हिन्दी प्रेम में कोई कमी नहीं आई। **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** के वे परम मित्र थे तथा उनकी साहित्य सेवा के परम प्रशंसक। **पिन्काट** खुद हिन्दी में काव्य रचना करते थे। उन्होंने **भारतेन्दु** को ब्रजभाषा पद्य में एक पत्र लिखा जिसका प्रारम्भ इस प्रकार था—

सोरठा—

वैश्य वंश अवतंस श्री बाबू हरिश्चन्द्र जू।
छीर नीर कलहंस टुक उत्तर लिखि देहु मोहि॥

कवित्त की चंद पंक्तियाँ—

पर उपकार में उदार अवनी में एक
भाषत अनेक राजा हरिचंद हैं।
विभव बडाई वपु वसन विलास लाखि
कहत यहाँ के लोग बाबू हरिचंद हैं॥

पिन्काट ने **भारतेन्दु** की उपमा सतयुग के दानी एवं सत्यनिष्ठ **राजा हरिश्चन्द्र** से की है।

डॉ० सर जार्ज एब्राहम ग्रियर्सन

हिन्दी के विदेशी सेवकों में **डॉ० जी०ए० ग्रियर्सन** का नाम अन्यतम है। वे भी इण्डियन सिविल सर्विस के अधिकारी बन कर भारत आये थे तथा तत्कालीन संयुक्त प्रान्त एवं बिहार में विभिन्न पदों पर रहे। डॉ० ग्रियर्सन का तुलसीदास विषयक अध्ययन विशाल तथा गम्भीर था। **तुलसी** की समन्वयशीलता तथा धर्म, दर्शन व समाज के क्षेत्रों में सर्वत्र समन्वय स्थापित करने की गोस्वामीजी की उदात्त वृत्ति को लक्ष्य में रख कर उन्होंने कहा था कि ''भारत में महात्मा बुद्ध के पश्चात् तुलसी के समान कोई दूसरा लोक नायक और जननेता उत्पन्न नहीं हुआ।'' **ग्रियर्सन** ने अंग्रेजी में हिन्दी साहित्य का विशद इतिहास लिखा था। भारतीय भाषाओं का उनकी प्रवृत्तियों के आधार पर पारिवारिक वर्गीकरण किया था। यह ध्यान रहे कि *हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास* फ्रैंच भाषा में एक फ्रैंच लेखक **गार्सा द तासी** ने लिखा था।

जिन विदेशी विद्वानों ने संस्कृत का अध्ययन व तत् विषयक लेखन किया था वे प्राय: हिन्दी के ज्ञाता तथा उसमें रुचि रखते थे। बनारस संस्कृत कालेज के अंग्रेज प्रिंसिपल **वेलेंटाइन** व **आर०टी०एच० ग्रिफिथ** के अतिरिक्त **जे०जे० मूर, एच०एच० कोलब्रुक, बूलर** तथा **विल्सन** आदि विद्वान् सभी हिन्दी से प्रेम रखते थे। **ग्रिफिथ** ने तो चारों वेदों का अंग्रेजी में पद्यानुवाद किया था तथा वाल्मीकीय रामायण का भी अंग्रेजी में उल्था किया था। **ग्रिफिथ** का रामचरितमानस पर भी असाधारण अधिकार था और इस महाकाव्य के अनेक मार्मिक स्थल उन्हें कण्ठस्थ

थे। एक प्रसंग ऐसा उपस्थित हुआ जब कालेज के एक उद्दण्ड छात्र को उनके सामने लाया गया तो छात्र ने **ग्रिफिथ साहब** के मानस प्रेम का फायदा उठाते हुए निम्न चौपाई कही—

जो लरिका कछु अनुचित करहीं।
गुरु पितु मातु मोद जिय भरहीं॥

यदि बच्चे कोई अनुचित भी करते हैं तो माता पिता व गुरु उसका बुरा नहीं मानते। **ग्रिफिथ साहब** लड़के का आशय समझ गये और उसकी अनुशासनहीनता को क्षमा के योग्य न मानते हुए उसी शैली में उत्तर दिया—

जो न देऊ सठ दण्ड कठोरा।
वृथा होहि श्रुति मारग मोरा॥

यदि मैं तुझे दण्ड नहीं दूँ तो यह उचित नहीं होगा।

मिश्नरियों का हिन्दी प्रेम

यद्यपि भारत में ईसाई मिश्नरी धर्म प्रचार के उद्देश्य को लेकर आये थे किन्तु उन्होंने अपने प्रचार कार्य का माध्यम मुख्यत: हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को बनाया। उन्होंने बाइबिल का हिन्दी अनुवाद किया, खण्डन-मण्डन तथा भजनों की पुस्तकें हिन्दी में लिखीं तथा आर्यसमाज जैसे धर्मान्दोलकों के विद्वानों से हिन्दी में शास्त्रार्थ भी किये। इसमें उनकी वाक्पटुता तथा धार्मिक सिद्धान्तों को हिन्दी में व्यक्त करने की क्षमता प्रकट होती थी।

बीसवीं शताब्दी के विदेशी हिन्दी प्रेमियों में इटली के विद्वान् **एल०पी० तैस्सितोरी**, बेलजियम से आये रामकथा के मर्मज्ञ तथा अंग्रेजी हिन्दी कोश के प्रणेता **डॉ० कामिल बुल्के** तथा रूसी भाषा में मानस का अनुवाद करने वाले **ए०पी० वरान्निकोव** के नाम उल्लेखनीय हैं। **तैस्सितोरी** ने राजस्थानी भाषा और साहित्य के अन्वेषण तथा विवेचन में सारा जीवन खपा दिया। यहाँ तक कि उनकी मृत्यु भी मात्र इकत्तीस वर्ष की अल्पायु में मरुस्थल में लू लगने से हुई। **पादरी कामिल बुल्के** ने **डॉ० धीरेन्द्र वर्मा** के मार्गदर्शन में रामकथा के स्रोतों तथा उसके वैश्विक विस्तार पर उच्चकोटि का शोध प्रबन्ध लिखा। उन्होंने तो भारत की नागरिकता ले ली थी और उनका निधन भी दिल्ली में हुआ था।

श्री ए०पी० वरान्निकोव ने न केवल रामचरितमानस का अपनी मातृभाषा रूसी में अनुवाद किया, उन्होंने मानस के पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को भी अपनाया। जिन विदेशी विद्वानों ने भारत के नवजागरण के आन्दोलनों का अध्ययन किया, उनके लिए हिन्दी का ज्ञान अपरिहार्य था। यही कारण है कि *अमेरिका* के **केनेथ जॉन्स**, *आस्ट्रेलिया* के **जे०टी०एफ० जार्डन्स** तथा *संयुक्त राज्य अमेरिका* की *मिस्सोरी स्टेट यूनीवर्सिटी* के **डॉ० लेवेलिन** ने अपने आर्यसमाज विषयक लेखन को प्रामाणिक बनाने के लिए इस संस्था के आधारभूत ग्रन्थों का हिन्दी में अध्ययन किया।

मीडिया में खत्म होती जा रही है साहित्य के लिए जगह

''साहित्य और मीडिया दो ऐसे पड़ोसी देश की तरह हैं जो हमेशा एक दूसरे से लड़ते रहते हैं। इनकी दुश्मनी पुरानी है। फिर भी साहित्य को मीडिया की जरूरत है।'' प्रख्यात कथाकार और हंस के सम्पादक राजेन्द्र यादव ने ये बातें एक गोष्ठी में कहीं। मीडिया में साहित्य की खत्म होती जगह पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमें एक खास तरह के साहित्य को ही साहित्य मानने की मानसिकता से उबरने की जरूरत है। जिस वक्त ऐसा होने लगेगा इस बहस का एक निष्कर्ष निकलता दिखाई देने लगेगा। उन्होंने अपनी बात को समझाने के लिए एक शेर भी पेश किया : ''पीछे बँधे हैं हाथ, पर शर्त है सफर... किससे कहें कि पाँव के काँटे निकाल दो!''

वरिष्ठ आलोचक, स्तम्भकार और हिन्दी के प्राध्यापक सुधीश पचौरी ने तमाम साहित्यकारों को मीडिया माध्यमों में बहने वाली सर्जना की नदी में उतरने की सलाह दी। उन्होंने साफ कहा कि ये तथ्य दरअसल गलत है कि हिन्दी साहित्य का प्रसार कम हुआ है। उन्होंने धर्मयुग और सारिका की तुलना में आज के अखबारों के प्रसार का उदाहरण देकर समझाना चाहा कि पहले साहित्य की 'रीच' अगर हजारों-लाखों में थी, तो आज करोड़ों में है। उन्होंने बताया कि बांग्लादेश युद्ध के समय मशहूरियत के अपने परम दिनों में धर्मयुग का सर्कुलेशन तीन लाख के आस-पास था। सारिका का सर्कुलेशन 70 हजार से ज्यादा कभी नहीं गया। आज हिन्दी में जो अखबार साहित्य का पेज दे रहे हैं, उनके सर्कुलेशन को देखिए तो पता चलेगा कि ये साहित्य को कितने लोगों तक पहुँचा रहे हैं।

सुधीश पचौरी ने कहा कि रामचन्द्र शुक्ल की 'कविता क्या है' वाली परिभाषा आज नहीं चलेगी। हर युग में मीडियम बदलता है, तो सवाल भी बदलते हैं। आज साहित्य क्या है? दलितों के लिए साहित्य आत्मकथा है। मार्जिनलाइज्ड के लिए आत्मकथा औजार है। हर युग में मीडियम के बदलने से लिटरेचर के फॉर्मेट बदले हैं। सुधीश पचौरी ने कहा कि जमाना बदल गया, लेकिन हिन्दी के आचार्य नहीं बदले। महानता गिर गयी। मेटा नैरेटिव के धुर्रे बिखर गये : मानस ग्रेट है, दलित कहता है कि संशोधन करो, ये ग्रेट नहीं है। यानी मानस की ग्रेटनेस के बावजूद एक बड़ी आबादी को ग्रेट आइडिया की तलाश है।

सुधीश पचौरी ने पर्याप्त हास के साथ गम्भीरता से कहा कि ये स्माइलीज का जमाना है। सुई-ब्लेड का जमाना है। कट किया जा सकता है।

वरिष्ठ पत्रकार और जनसत्ता के सम्पादक ओम थानवी ने साहित्य को कैजुअली न लेने का अनुरोध किया और कहा कि उसके साथ फौरी किस्म का बर्ताव सही नहीं है। संस्कार के खिलाफ है। उन्होंने बताया कि अज्ञेय कहते थे, आत्मकथा अहंकार की चीज है। वे रवीश की उन बातों पर रिएक्ट कर रहे थे, जिसमें उन्होंने कहा था कि मीडिया साहित्यकार के पास जाने को तैयार है लेकिन साहित्यकार को भी मीडिया की तरफ दौड़ना चाहिए—मन का संकोच तोड़ना चाहिए। ओम थानवी ने रवीश की इस चुटकी का जवाब दिया कि केदार सिंह जैसे कवियों को अपनी कविता पंक्तियाँ ट्विट करनी चाहिए। ओम थानवी ने कहा कि कोई कविता बहुत टाइम में बनती है। शमशेर पूरी कविता लिखने के महीनों बाद भी उसे सार्वजनिक नहीं करते थे। शमशेर को कहाँ समझा गया था उनके जीवन काल में? आज उनकी जगह साहित्य में शिखर पर है। आज जो नये मीडिया माध्यमों में साहित्य आ रहा है, उसमें शब्दों की किफायत नहीं है। बहुत शब्द इकट्ठा हो रहे हैं और उनकी विश्वसनीयता नहीं हैं।

ओम थानवी ने कहा कि असल बात ये है कि मीडिया साहित्य को कितनी जगह देता है। सम्पादक पर बाजार का दबाव है। साहित्य प्रेमी व्यक्ति मीडिया खड़ा नहीं कर सकता। इंग्लिश में साहित्यकार सब होते हैं। हिन्दी में तहजीब है कि कौन बाजारू है, कौन गम्भीर है। क्वालिटी और क्वांटिटी का फर्क हमेशा रखना चाहिए।

वरिष्ठ टीवी पत्रकार रवीश कुमार ने कहा कि टीवी सहित तमाम नये मीडिया माध्यमों की फुर्ती के आगे साहित्यकार सुस्त पड़ जाते हैं, इसलिए उन्हें कोई नहीं पूछता। साहित्यकार अभी बैलगाड़ी अवस्था में रहता है, जबकि मीडिया माध्यम जेट विमान की तरह सेकेंडों का समयसाक्षी हो गया है। रवीश कुमार ने कहा कि साहित्यकार नये मीडिया माध्यम को शानदार बाइट दे सकते हैं लेकिन उनका बाइट ठहरकर निकलता है और जब तक ये बाइट देने के लिए तैयार होते हैं, तब तक मुद्दा ही छूट कर पीछे जा चुका होता है। रवीश कुमार ने कहा कि साहित्यकारों को मीडिया के साथ सहज होने के लिए अपनी सुस्ती तोड़नी होगी, क्योंकि वे औरों से कहीं बेहतर राष्ट्रीय प्रवक्ता हो सकते हैं।

पूर्णतया परिवर्धित संस्करण : 2010

प्राचीन भारत

डॉ० राजबली पाण्डेय

'' 1960 ईस्वी से लेकर आज तक पुरातत्त्व की नई शोधों ने भारतीय प्रागैतिहास पर बहुत प्रकाश डाला है। इनके प्रकाश में ग्रन्थ में प्रागैतिहास के अध्याय का पुन: लेखन किया गया है। साथ-साथ इतिहास के विभिन्न काल-क्रमों की पुरातात्त्विक संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है। भारतीय इतिहास की कुछ ज्वलंत समस्याओं पर भी नई शोधों के प्रकाश में नया लेखन प्रस्तुत है।''

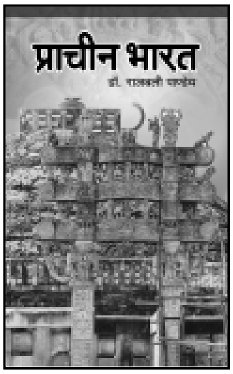

आकार डिमाई

पृष्ठ 572 + चित्र 40 पेज

सजिल्द : 978-81-7124-719-6 • रु० 450.00
अजिल्द : 978-81-7124-720-2 • रु० 250.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

प्रागैतिहासिक काल

सभ्यता का उदय

यह बात अभी भी विवादास्पद है, कि सबसे पहले पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति कहाँ हुई। इसमें संदेह नहीं, कि भारतवर्ष उन प्राचीनतम देशों में से एक है, जहाँ पर मनुष्य ने अपनी जीवन-लीला शुरू की होगी। यहाँ एक प्रश्न स्वाभाविक है, कि मानव जाति के इस भूलोक पर प्रकट होने से पूर्व क्या था? वैज्ञानिक खोजों के आधार पर यह कहा गया है, कि भूमण्डल पर जीव-जन्तुओं का विकास बहुत धीरे-धीरे हुआ है। मनुष्य प्रारम्भ में अपने को पशु धरातल से ऊपर उठा न सका और इस धरातल से ऊपर उठकर सभ्य होने में उसे सहस्त्रों वर्ष लग गए। इस प्रयास का कोई लिखित इतिहास नहीं है। इस काल का चित्र इतिहासकार जीवशास्त्र, पुरातत्त्व एवं मानवशास्त्र आदि के आधार पर खींचने की चेष्टा करते हैं। इतने बड़े काल का विभाजन उन पदार्थों के नाम पर किया गया, जिनके औजार और हथियार बनाकर मनुष्य अपनी रक्षा और जीवन-निर्वाह करता था।

भूतकालीन संस्कृतियों के लिए प्राय: प्रागैतिहास (Prihistory) एवं इतिहास (History) नामकरण प्रयुक्त होता है। प्रागैतिहास लिपि प्रारम्भ के पूर्व की संस्कृतियों से सम्बन्धित है, जबकि इतिहास लिपिबद्ध विवरणों से। कई बार लिपि तो प्राप्त है, पर वह अपठित है। उदाहरण के लिए—हड़प्पा सभ्यता। ऐसे में इसे आद्यइतिहास (Protohistory) कहा गया है। इतिहास में मुख्यत: व्यक्तियों और राष्ट्रों के सम्बन्ध में सही-सही कालक्रम का उल्लेख किया जाता है, दूसरी ओर प्रागैतिहास में पुरातात्त्वीय पद्धति से साक्ष्यों की तलाश की जाती है और उसके आधार पर गतिविधियों का विवरण तैयार किया जाता है। हो सकता है, कि आरम्भिक दौर के साक्ष्य इतने अधूरे हों, कि उनके आधार पर सम्पूर्ण गतिविधि का चित्र बनाना मुश्किल हो। फिर सही-सही कालक्रम प्राप्त करना भी संगत नहीं, क्योंकि हमारी समय की माप ही इतनी दूर तक लागू नहीं हो सकती। अत: प्रागैतिहास की धारणा के लिए एक तो कोई कामचलाऊ मापक तैयार किया गया और दूसरी ओर प्राप्त पुरावशेषों के भीतर से सांस्कृतिक सूचकों को ढूँढ़ कर संस्कृति की व्याख्या विद्वानों ने की।

प्रागैतिहासिक साक्ष्य धरती के ऊपर, गुफाओं में दबे हुए या प्राचीन नदी निक्षेपों के साथ-साथ मिलते हैं। प्राकृतिक गतिविधियों के परिणामस्वरूप धरती पर दबी हुई किसी भी चीज का अध्ययन स्तरक्रम-विज्ञान के नियम के अनुसार किया गया। इस नियम के अनुसार किसी भी स्तरीकरण में निम्नतम स्तर सबसे पुराना होता है और ऊपर का स्तर क्रमश: बाद का। किन्तु यदि यह निक्षेप किसी नदी का हो, तो नदी का पाट उसमें किसी दूसरी नदी के गिरने से या भूकंप के कारण टुकड़े-टुकड़े हो गया हो, तो यह संभव है, कि क्रमश: बाद वाला स्तर उत्तल संरचना पर जमा हो गया हो। इस संरचना में सबसे नया निक्षेप निम्नतम तल पर पानी के वर्तमान स्तर के निकटतम होगा, जबकि सबसे पुराना निक्षेप उच्चतम तल पर होगा। यही नदी के सबसे पुराने पाट का सूचक भी होगा। इसके साथ ही जब किसी बड़े क्षेत्र के सन्दर्भ में एक जैसे अनेक कालक्रम उपलब्ध हों तब इन निक्षेपों के प्रमुख लक्षणों की तुलना कर उस क्षेत्र का संश्लिष्ट कालानुक्रम तैयार कर सकते हैं। इस प्रकार प्रागैतिहासिक कालक्रम निश्चित करना जटिल कार्य है। भारत के अधिकांश पुरापाषाण कालों में भी इसी प्रकार की कालक्रम की अनिश्चितता दिखाई पड़ती है। प्रागैतिहासिक कालक्रम के निर्धारण में यह आवश्यक नहीं, कि सारे विश्व में एक ही समय एक ही काल की संस्कृति पल्लवित हो रही हो, या कालक्रमानुसार किसी स्थान विशेष पर एक संस्कृति अचानक ही समाप्त हो जाए, एवं दूसरी संस्कृति प्रकट हो जाए, अथवा एक ही साथ दो संस्कृतियों के अवशेष एक स्थान विशेष से प्राप्त हों, अथवा उदाहरण के लिए क्रम में पुरापाषाण काल के पश्चात् मध्य पाषाण काल के संकेत न मिल कर नव पाषाणकालीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हों, ऐसी कई बातें हैं, जो प्रागैतिहास के अध्ययन में अनिश्चितता उत्पन्न करती हैं। इसे ध्यान में रख कर ही प्रागैतिहास का अध्ययन किया जा सकता है।

भारत में हमें मानव की तरह के प्राणी की ऐसी पहली शाखा देखने को मिलती है, जो एक करोड़ बीस लाख से लेकर नब्बे लाख वर्ष तक पुरानी है। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ल्यूबाक ने पाषाण उपकरणों के विभाजन कर उन्हें प्राचीन एवं नवीन उपकरणों में बाँटा। प्राचीन के लिए Paleo और पाषाण के लिए Lithos शब्द का प्रयोग किया गया। इसी प्रकार नवीन के लिए Neo शब्द का प्रयोग हुआ और इसी परम्परा में कालक्रमों का नामकरण सम्भव हुआ।

भारत में प्रागैतिहासिक अध्ययन का प्रारम्भ 'जियालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' ने आरम्भ किया। फिर 1863 ईस्वी सन् में रॉबर्ट ब्रुस फुट का नाम उल्लेखनीय है, जिन्होंने पल्लवरम् के पास खुदाई कर आदि मानव के उपकरण (क्लीवर-विदारणी) प्राप्त किए। धीरे-धीरे पुरातत्त्व विभाग एवं विभिन्न शोध संस्थाओं ने इस कार्य को आगे बढ़ाया और भारत के प्रागैतिहासिक अध्ययन को दिशा प्रदान की। प्राप्त अवशेषों के आधार पर पुरातत्त्ववेत्ताओं ने मानव सभ्यता का विकास क्रमश: तीन चरणों में माना—(1) पाषाण युग, (2) ताम्र पाषाण युग, (3) लौह युग। पाषाणकालीय मनुष्य के क्रमिक विकास को तीन भागों में विभक्त किया गया—(1) पुरापाषाण काल, (2) मध्य पाषाण काल, (3) नव पाषाण काल।

१. पुरापाषाण काल

भारत के पुरापाषाण कालीन अवशेषों से ज्ञात कालक्रम को विद्वान् विश्वव्यापी कालक्रम के साथ जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। विद्वान् भारत की पुरापाषाण कालीन सभ्यता का विकास प्लाइस्टोसीन काल या हिम युग में मानते हैं। पत्थर के अवशेषों के स्पष्टत: लक्षित मानव की प्रथम उपस्थिति मध्य प्लाइस्टोसीन से पहले की नहीं जान पड़ती है। प्लाइस्टोसीन काल में पृथ्वी की सतह का बहुत अधिक भाग, खासकर अधिक ऊँचाई पर और उसके आसपास के स्थान बर्फ की चादरों से ढका रहता था। किन्तु पर्वतों को छोड़ उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र बर्फ से मुक्त था बल्कि वहाँ दीर्घ काल तक भारी वर्षा होती रहती थी।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

आधुनिक विज्ञापन : कला एवं व्यवहार

डॉ० अर्जुन तिवारी

'' जर्नलिज़्म का एक बलशाली, प्रभावकारी स्वरूप 'मार्केट ओरिएण्टेड जर्नलिज़्म' है। व्यवसाय-जगत का शुभेच्छु, औद्योगिक क्रान्ति का अग्रदूत, राष्ट्रहित का चिन्तक, पब्लिक वेलफेयर का प्रमोटर, विपणन का प्रेरक, बेहतर जीवन-स्तर की कामना पैदा करने वाला हमदर्द 'विज्ञापन' अपने में एक मनोरम कला, व्यवसाय-प्रबन्धन का साधन, रोजगार का विस्तृत क्षेत्र है जिसके सन्दर्भ में यह ग्रन्थ प्रस्तुत है।''

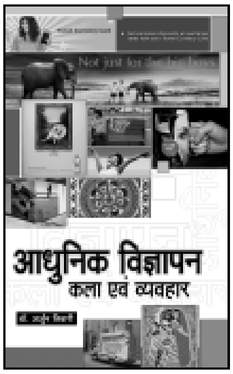

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 252

सजिल्द : 978-81-7124-715-8 • रु० 250.00

अजिल्द : 978-81-7124-716-5 • रु० 150.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

ब्राण्ड

ब्राण्ड पर जोर दो, वस्तुओं के विक्रय की राह आसान करो, सेवाओं का विस्तार करो, उन्हीं व्यापार अथवा कारोबार में रहो, जिनमें ऊपर के तीन स्थानों में आपकी गिनती हो सके। बाजारीकरण के इस दौर में नैतिक मूल्यों को बनाए रखते हुए प्रतिस्पर्द्धी बाजार में अपने व्यवसाय व ब्राण्ड का सिक्का जमाए रखना चाहिए।

—रतन टाटा

दिलपकड़ नारों, सुनहरे रुपहले वादों तथा लच्छेदार भाषणों के बल पर श्रोता, उपभोक्ता, मतदाता, ग्राहकों को अपनी मुट्ठी में करने का धंधा बड़े-बड़े लोग ही करते हैं।

कॉरपोरेट और विपणन जनसम्पर्क के लक्ष्यों को बिना विज्ञापन की मदद के प्राप्त करना सम्भव नहीं है। आजकल विपणन तथा कॉरपोरेट जनसम्पर्क में ब्राण्ड और ब्राण्डिग महत्त्वपूर्ण हो गये हैं। कोई उत्पाद जब अलग नाम, पैकिंग, पंचलाइन, विशेषता के साथ उपलब्ध होता है तो वह ब्राण्ड होता है। ब्राण्ड-स्थापना की यह प्रक्रिया ब्राण्डिंग कहलाती है। ब्राण्डिंग एक नियोजित रणनीति है जो उत्पाद के लिए विश्वास, लोकप्रियता अर्जित करती है। ब्राण्ड की स्थापना में प्रसिद्ध व्यक्तियों, खिलाड़ियों, सितारों द्वारा की गयी वकालत महत्त्वपूर्ण होती है। विज्ञापन और जनसम्पर्क की भाषा में इन्हें ब्राण्ड एम्बेसडर कहा जाता है। ब्राण्ड एम्बेसडर जनता के बीच जाने-पहचाने जाते हैं तथा लोकप्रिय होते हैं। उनकी लोकप्रियता का लाभ ब्राण्ड को भी मिलता है तथा ब्राण्ड की पहचान जल्दी बन जाती है। इसीलिए ब्राण्डिंग की प्रक्रिया में ब्राण्ड एम्बेसडर अनिवार्य होते जा रहे हैं।

ब्राण्ड को ऑक्सफोर्ड शब्दकोश ने Mark of identification के रूप में लिखा है। ब्राण्ड का आशय किसी संगठन विशेष द्वारा प्रदत्त उत्पाद, सेवा या विचार से लगाया जा सकता है। ब्राण्ड किसी उत्पाद और उसके निर्माता को एक पहचान देता है। ब्राण्ड के नाम से ही किसी उत्पाद को लोग जानते और पसन्द करते हैं। ब्राण्ड एक तरह का नामकरण है जो एक उत्पाद को दूसरे उत्पाद से अलग करता है। आज के प्रतिस्पर्धी समय में किसी भी श्रेणी में वस्तुओं अथवा सेवाओं के अनेक विकल्प बाजार में मौजूद हैं। ऐसे में ब्राण्ड ही उपभोक्ता को किसी उत्पादक विशेष के उत्पाद से परिचित कराते हैं। जैसे सिन्थॉल ब्राण्ड गोदरेज की पहचान कराता है।

ब्राण्ड की उपभोक्ताओं के बीच में एक पहचान रहती है तथा ब्राण्ड की माँग करके ही उपभोक्ता किसी उत्पाद में उपलब्ध विशिष्ट सुविधाओं, विशेषताओं आदि की माँग करता है। ब्राण्ड विपणन-गतिविधियों तथा बाजार में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

ब्राण्ड की परिभाषा : ब्राण्ड की अवधारणा के बारे में विज्ञापन क्षेत्र के विशेषज्ञ **ऑरकर** का कहना है— ''ब्राण्ड की स्थापना, व्यवसाय अथवा उद्योग की प्रगति में सहायक एक अत्यन्त जटिल केन्द्रीय प्रक्रिया है। इसका संदेश उद्देश्यपरक होता है, जो उपभोक्ताओं के विचारों को गहरे से प्रभावित करता है।'' यह ब्राण्ड का ही प्रभाव है कि न केवल शहरों में बल्कि दूरदराज ग्रामीण क्षेत्रों में भी ब्रिटानिया बिस्कुट जाना जाता है, लोग कोलगेट से ब्रश करते हैं, कोला पीते हैं तथा लक्स साबुन से सौन्दर्य निखारते हैं। **जमील गुलरेज** के अनुसार— ''ब्राण्ड के विज्ञापन दर्शकों के मन में केवल जिज्ञासा ही नहीं पैदा करते बल्कि उपभोक्ताओं की जेब भी हल्की करते हैं।''

अलराइस का मानना है—''व्यवसाय में ब्राण्ड की हैसियत एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है, जिसका सम्बन्ध उत्पादन से लेकर बिक्री तक है।'' अमेरिका के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **डॉ० पीटर शिन बाम** के अनुसार— ''ब्राण्ड की अवधारणा केवल विज्ञापन द्वारा जरूरत-पूर्ति का जरिया ही नहीं बल्कि यह ग्राहकों के दिल-दिमाग दोनों में जरूरत पैदा करने से सम्बन्धित है। विज्ञापन उपभोक्ताओं को न केवल वस्तु बल्कि ब्राण्ड के बारे में भी सूचित करता है।''

क्रिस्टोफर फ्लेविन का कहना है—''बढ़ते उपभोग से बुनियादी जरूरतें पूरी करने और रोजगार के अवसर पैदा करने में ब्राण्ड की सहायक भूमिका है।''

स्त्री-पुरुष एवं युवाओं के परिधान, सौन्दर्य-प्रसाधन, मोबाइल, घड़ियाँ, जूते, वाइन, खाने-पीने की वस्तुएँ आदि सभी ग्राहकोन्मुखी उत्पादों की बिक्री के लिए 'ब्राण्ड' की अवधारणा का साकार होना आवश्यक हो गया है। विज्ञापन एजेन्सियाँ ब्राण्ड के वैश्विक स्थापना के कार्य को सफलतापूर्वक सम्पादित करती हैं। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'ब्राण्ड' की छवि, उसकी पहचान व मान्यता स्थापित होने पर सम्बन्धित उत्पाद के लिए एक विशाल बाजार उपलब्ध होता है और ग्राहकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। सभी प्रमुख कम्पनियाँ अपने 'ब्राण्ड' को एक व्यापारिक, प्रतीक चिह्न के रूप में अथवा अपने उत्पादों को कोई विशिष्ट नाम देकर उपभोक्ताओं के समक्ष बिक्री हेतु प्रस्तुत करती हैं। यही धीरे-धीरे अपनी विश्वसनीयता व गुणवत्ता के बल पर ग्राहकों के मन में एक अमिट छाप छोड़ता है और अपने उत्पादों की निरन्तर खरीद के प्रति उन्हें आश्वस्त करता है।

"A brand is a device by which personality is given to a product. It creates an image. It is an attempt to isolate a part of the market by creating a brand image."

"Branding is a commonly accepted technique for product differentiation. Brands are passports to exclusive protected markets."

आप बाजार में कोई खरीदारी करते हैं, उसमें सबसे अहम् भूमिका ब्राण्ड की ही होती है। मैकडोनाल्ड, माइक्रोसॉफ्ट व डिजनी जैसी कम्पनियों के उत्पाद खरीदने में हमें कोई हिचक नहीं होती। निश्चित रूप से इन ब्राण्ड्स ने अपनी एक खास पहचान बना ली है। इसमें न केवल आपको एक नई पहचान मिलेगी, बल्कि आप मनचाही मंजिल भी प्राप्त कर लेंगे।

डेविड ओगिल्वी के अनुसार—''विज्ञापन सन्देश, सामग्री अथवा प्रस्तुतिकरण के साथ यह बात अधिक महत्त्वपूर्ण है कि ब्राण्ड व उत्पाद को कितने प्रभावपूर्ण ढंग से स्थापित किया गया है। पूर्ण योजनाबद्ध रूप से किया गया यह कार्य ही विज्ञापन निष्कर्षों को प्रभावित करता है।''

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

वेद राही को राज्य सम्मान

श्रीनगर में साहित्यकार अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित डोगरी के चर्चित लेखक वेद राही को कश्मीर की प्रख्यात मध्ययुगीन कवयित्री ललद्यद की जीवनी पर आधारित उपन्यास के लिए जम्मू-कश्मीर के मुख्यमन्त्री उमर अब्दुल्ला द्वारा प्रदेश सरकार लेखक सम्मान से सम्मानित किया गया। 'ललद्यद' उपन्यास कई भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। इससे पहले इस उपन्यास को जम्मू और कश्मीर की कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी की ओर से वर्ष 2009 की सबसे अच्छी पुस्तक के रूप में पुरस्कृत किया जा चुका है।

ओमान में उर्दू कवि सम्मानित

मस्कट स्थित भारतीय दूतावास के सभागार में इण्डियन सोशल एसोसिएशन द्वारा आयोजित समारोह में ओमान में भारत के राजदूत अनिल वधवा ने उर्दू के कवि सुरेन्द्र भूटानी को उर्दू साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित किया है। पोलैण्ड में रहने वाले भूटानी एक शिक्षाविद् और पत्रकार भी हैं। राजदूत ने भूटानी के नए कविता-संग्रह 'उनवान बदलता रहा' पर बोलते हुए कहा कि पिछले तीन दशकों से भूटानी ने उर्दू साहित्य में महान् सफलताएँ हासिल की हैं। उनका वर्तमान संग्रह उर्दू साहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है।

डॉ० नीरजा को साहित्य अकादमी पुरस्कार

वाराणसी। प्रख्यात उपन्यासकार डॉ० नीरजा माधव को मध्य प्रदेश का साहित्य अकादमी पुरस्कार 22 जुलाई को भोपाल में आयोजित समारोह में शरणार्थियों की समस्याओं पर केन्द्रित उनके बहुचर्चित उपन्यास 'गेशे जम्पा' के लिए मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति एवं शिक्षा मंत्री लक्ष्मीकान्त शर्मा द्वारा प्रदान किया गया। समारोह में अकादमी के निदेशक प्रो० टी०एन० शुक्ल, वरिष्ठ साहित्यकार चित्रा मुद्गल एवं मध्य प्रदेश संस्कृति मंत्रालय की प्रमुख सचिव स्नेहलता श्रीवास्तव भी उपस्थित थीं।

प्रो० चौथीराम सम्मानित

वाराणसी। सावित्री त्रिपाठी फाउंडेशन की ओर से पराड़कर स्मृति भवन में आयोजित एक समारोह में आलोचक प्रो० चौथीराम यादव को सम्मानित किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह ने कहा कि प्रो० चौथीराम का सम्मान आलोचना की दूसरी परम्परा का सम्मान है। प्रो० यादव आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी व प्रो० नामवर सिंह की आलोचना परम्परा के संवाहक हैं। उन्हें दलित और स्त्री विमर्श को सर्वाधिक मुखर ढंग से अभिव्यक्ति देने का श्रेय है। अध्यक्षता प्रो० दीपक मलिक ने की।

कथाकार हिमांशु जोशी सम्मानित

27 जून को बहुचर्चित कथाकार श्री हिमांशु जोशी को कुमाऊँ विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित एक भव्य समारोह में उत्तराखण्ड की राज्यपाल श्रीमती मारग्रेट अल्वा द्वारा डी०लिट्० की उपाधि से सम्मानित किया गया।

'परम्परा-सम्मान' घोषित

17 जुलाई को राजधानी दिल्ली की साहित्यिक संस्था 'परम्परा' ने वर्ष 2010 के परम्परा सम्मानों की घोषणा की। इस वर्ष का 'परम्परा ऋतुराज सम्मान' श्री विष्णु नागर व श्री नरेश शांडिल्य को एवं 'परम्परा विशिष्ट ऋतुराज सम्मान' श्री शेखर सेन को दिया जाएगा। इन दोनों सम्मानों के लिए इक्यावन-इक्यावन हजार की राशि दी जाती है। ये सम्मान 13 अगस्त को नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में दिए जाएँगे।

डॉ० नागेश को 'प्रभा स्मृति बाल साहित्य सम्मान'

विगत दिनों श्री गाँधी पुस्तकालय द्वारा शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रथम 'प्रभा स्मृति बाल साहित्य सम्मान' बाल साहित्यकार डॉ० नागेश पाण्डेय 'संजय' को प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति-पत्र, प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र, सरस्वती प्रतिमा एवं नकद राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री अजय गुप्त के बालगीत संग्रह 'जंगल में मोबाइल' का भी विमोचन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' ने की। डॉ० चक्रधर 'नलिन' विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

डॉ० सुरेश गौतम को 'हरियाणा गौरव सम्मान'

विगत दिनों हरियाणा सरकार द्वारा संस्थापित स्वायत्तशासी संस्था हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए लब्ध-प्रतिष्ठ गीत-समीक्षक डॉ० सुरेश गौतम का चयन 'हरियाणा गौरव सम्मान' वर्ष 2008-09 के लिए किया गया है। पुरस्कारस्वरूप उन्हें सम्मान-पत्र, प्रतीक चिह्न के साथ एक लाख रुपए की राशि प्रदान की जाएगी।

आर्य स्मृति साहित्य सम्मान : 2010

किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली अपने संस्थापक पण्डित जगतराम आर्य की जन्मतिथि 16 दिसम्बर को प्रतिवर्ष 'आर्य स्मृति साहित्य सम्मान' के रूप में मनाता है। इसी क्रम में वर्ष 2010 के लिए किशोरोपयोगी उपन्यास की श्रेष्ठ पाण्डुलिपियाँ विचारार्थ आमन्त्रित हैं। इस बार हम दो किशोरोपयोगी उपन्यासों का चयन करेंगे और दोनों पाण्डुलिपियों के लेखकों को इक्कीस-इक्कीस हजार रुपए की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी। सम्मानित होने वाली दोनों पाण्डुलिपियों को प्रकाशित कर, पुस्तकों पर समुचित रॉयल्टी भी दी जाएगी।

कृपया सम्पर्क करें—"आर्य स्मृति साहित्य सम्मान, किताबघर प्रकाशन, 24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002"

साहित्यकार / पत्रकार सम्मान समारोह 2010 हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

जबलपुर की साहित्यिक/सांस्कृतिक संस्था 'कादंबरी' द्वारा साहित्यकार/पत्रकार सम्मान समारोह 2010 हेतु विभिन्न विधाओं में प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं। सम्मान समारोह 27 नवम्बर 2010 को आयोजित किया जाएगा। प्रविष्टियाँ 30 सितम्बर तक प्राप्त हो जानी चाहिए।

समग्र जानकारी हेतु सम्पर्क करें—डॉ० गार्गीशरण मिश्र 'मराल', 1436/बी, सरस्वती कॉलोनी, चेरीताल वार्ड, जबलपुर, मध्यप्रदेश, पिन-482002

अखिल भारतीय लघु कथा सम्मान सूचना

लघुकथाकारों को उचित मंच एवं मान देने के क्रम में अनुमानतः अक्टूबर, 2010 में 'अ०भा० लघुकथा सम्मेलन व सम्मान समारोह' का आयोजन प्रस्तावित है। इसमें ऐसे सभी लघुकथाकार, जो कम से कम 5 वर्षों से लघुकथा लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हों और जिनकी कम से कम दस सराहनीय लघुकथाएँ प्रकाशित हो चुकी हों, आमंत्रित हैं। यदि किसी लघुकथाकार की पुस्तक भी प्रकाशित हुई होगी तो सम्मान हेतु उसे वरीयता दी जाएगी। प्रविष्टियाँ भेजने की अन्तिम तिथि 20 अगस्त 2010 है। जानकारी के लिए सम्पर्क करें : सम्पादक/संयोजक, 'हम सब साथ साथ' पत्रिका, 916 बाबा फरीदपुरी, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110008, मो० 9868709348,
ई-मेल humsabsathsath@gmail.com

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

डॉ० रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास, दिल्ली द्वारा सोलहवें रत्नशर्मा स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार, वर्ष 2010 के लिए रचनात्मक, हिन्दी बाल-साहित्य—कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि की कृतियाँ प्रस्तुत की जा सकती हैं। पुरस्कार-स्वरूप 31,000 रुपए, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए जाएँगे। भेजने की अन्तिम तिथि 10 अगस्त है। पता है—महासचिव, डॉ० रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास, 306-308, तृतीय तल, सुषमा टावर, डी ब्लॉक, सेंट्रल मार्केट, प्रशांत विहार, दिल्ली

पाठकों के पत्र

आपके द्वारा प्रेषित 'भारतीय वाङ्मय' के अंक बराबर मिल रहे हैं। सही अर्थों मे आपकी पत्रिका साहित्य की सेवा कर रही है। आजकल प्रकाशन संस्थानों से पत्रिकाएँ निकालने का फैशन चल पड़ा है। इन पत्रिकाओं में बासी पृष्ठ अधिक लगे रहते हैं, ताजी सामग्री कम ही देखने में आती है। आप समसामयिक आलेखों को भी प्रमुखता से प्रकाशित करते हैं, साभार लिए गए आपके आलेख भी पठनीय होते हैं। स्व० मोदीजी की परम्परा को आप बनाए हुए हैं, एतदर्थ मेरा साधुवाद स्वीकार करें।

—**डॉ० सुरेन्द्र विक्रम**
एसो० प्रोफेसर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
लखनऊ क्रिश्चियन कालेज

'भारतीय वाङ्मय' फरवरी-मार्च 2010 का अवलोकन कर पत्र लेखन को प्रोत्साहित हुआ। हिन्दी साहित्य की प्रगति, साहित्यकारों के सम्मान के साथ आपका सम्पादकीय अतीव आकर्षक ही नहीं अपितु प्रेरणास्पद है। साधुवाद। आपने अन्त में 'श्वानों को मिलता दूध, भूखे बच्चे बिलबिलाते हैं, की पूर्ति 'दूध-दूध ओ वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं' में की।

—**काशीलाल शर्मा,** भीलवाड़ा, राजस्थान

सदा की भाँति जून 2010 अंक अनेक ज्ञानवर्द्धक पठनीय सामग्री से ओत-प्रोत है। रवीन्द्रनाथ जी, प्रेमचंद, विक्टर ह्यूगो एवं श्री मैथिलीशरण जी की विचित्र आदतें ध्यान देने योग्य हैं। सम्पादकीय नये भारत के निर्माण में माता पिता, अभिभावकों, गुरुओं के बच्चों के प्रति कर्त्तव्यों की जो वास्तविकता देती है और बच्चों के टीवी देखने, फास्ट फूड लेने आदि सम्बन्धी अस्वास्थ्यकर स्थिति का जो वर्णन दिया गया है वह ध्यान देने योग्य है। डॉ० भानुशंकर मेहता की साहित्यिक यात्रा विभिन्न नामों का प्रयोग करके लेखन कार्य करते रहना निश्चय ही आँखें खोल देने वाला अजीब कार्य है जो उनकी विद्वत्ता व अनुभव का लोहा मनवाता है।

—**मदन मोहन वर्मा,** ग्वालियर, मध्यप्रदेश

प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सु-साहित्य पुस्तकालय' में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय है।

आपके इस सु-प्रयास के लिये सम्पादक मंडल बधाई व साधुवाद के पात्र हैं।

—**संतोष बी० गुप्ता,** सक्करसाथ
अमरावती

यात्रा में आपकी पत्रिका के जून अंक के साथ बतियाना कुछ अलग ही सुकून दे गया। कोहली जी के 'तोड़ो कारा तोड़ो' के विश्वव्यापी नायक का अनुकरण समाज अपने-अपने सन्दर्भों में कर रहा है। यह हम सबके लिए दुर्भाग्य की बात है।

लाल आतंक के पन्ने भी पीड़ा, अश्रु, कराह, चीख से भरे मिले। सारे विद्रोह, प्रतिशोध, आक्रोश, के पीछे हमें जीने की राह तो खोजनी ही होगी, बारूदी-विद्रोह असन्तुष्ट मानसिकता का एक-पक्षीय चित्रण है—गाते-गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।

हिन्दी हृदय की नई धड़कन से कुछ नई कोपलें फूटी हैं, आने वाले पावस में वे आकार लें, बढ़ें-फलें, आगे बढ़ें। वैसे हिन्दी पट्टी के लोग बहुत पहले से आगे बढ़े हुए हैं, भारत ही नहीं विश्व के अनेक देशों में पूरी अस्मिता और अस्तित्व के साथ, आत्मविश्वास से जी रहे हैं।

डॉ० मेहता जी का रचना-संसार भी व्यापक है। एक बात जो गर्व से भर गई, वो गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के प्रथम समावर्तन समारोह में गाउन न पहनने का संकल्प है। यह विचारणीय, अनुकरणीय मुद्दा है। 'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'। हर अंक महत्त्वपूर्ण होता है। बधाई!

—**शुभदा पाण्डेय,** असम

'भारतीय वाङ्मय' के अंक '6' (जून' 10) में प्रकाशित डॉ० भानुशंकर मेहता की 90वीं वर्षगाँठ के सन्दर्भ में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सांगोपांग प्रकाश डालने वाले 'चालीस पुस्तकें छपीं, सौ अब तक छुपीं' शीर्षक आलेख के लिये हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। कविता, कहानी, नाटक और हास्य-व्यंग्य आदि विविध विधाओं में तथा गंगा, बनारस, पर्यटन और रामलीला आदि विभिन्न विषयों पर अपने प्रचुर लेखन से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने वाले डॉ० भानुशंकर मेहताजी का यह दर्द कि 'यहाँ कुछ लोगों को उनका साहित्यकार होना स्वीकार ही नहीं' वस्तुतः काफी दुःखद है।

'हिन्दी हृदय की नयी धड़कन' और 'ऐसे तो हिन्दी का भला नहीं होगा' शीर्षक आलेखों में हिन्दी के सन्दर्भ में जो आँकलन किया गया है और जो सम्भावनाएँ जतायी गयी हैं उनसे हिन्दी साहित्य जगत को बड़ी आशायें बँधी हैं। शेष पृष्ठों पर भी रोचक और ज्ञानवर्द्धक जानकारियाँ हैं।

—**डॉ० पवन कुमार शास्त्री,** वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' में पठनीय सामग्री का उत्तम संग्रह रहता है। प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र के दो लेख तो अत्यन्त प्रभावशाली तथा विचारोत्तेजक थे। धार्मिक ठेकेदारी में उन्होंने धर्म के नाम पर दूकानदारी का पर्दाफाश किया तो आर्य बनाम द्रविड़ के कल्पित मिथ का ध्वंस किया। सुयोग्य सम्पादन के लिए पुनः बधाई।

—**प्रो० (डॉ०) भवानीलाल भारतीय**
श्रीगंगानगर

स्मृति-शेष

मार्कण्डेय प्रवासी का निधन

पटना में हिन्दी व मैथिली के वरिष्ठ साहित्कार व पत्रकार मार्कण्डेय प्रवासी का 13 जून को निधन हो गया। वह 68 वर्ष के थे। उन्हें उनके 'अगस्त्ययायनी' महाकाव्य के लिए साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत भी किया गया था। हिन्दी में शंखध्वनि, कविता बोलती है, सूरज ने लिखा है, कस्तूरी बाई (उपन्यास) काफी चर्चित रहीं। मैथिली में अगस्त्ययायनी के अलावा अभियान, हम कालिदास, हम भेटब काफी चर्चित हैं।

श्री एन० रामय्या का निधन

श्री रामय्या जी मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् हिन्दी शिक्षक ट्रेनिंग कॉलेज के वर्षों तक प्रांशुपाल रहे और उससे पूर्व वे कर्नाटक राज्य शिक्षा विभाग में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ देते रहे। हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में उनके द्वारा दिया गया योगदान विद्यार्थियों का वर्षों तक मार्गदर्शन करता रहेगा। हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा, समर्पण भाव हमेशा याद किया जायेगा। विगत दिनांक 8-6-2010 को वे दिवंगत हो गये।

वरिष्ठ पत्रकार
श्री रामशंकर अग्निहोत्री नहीं रहे

6 जुलाई को अग्रणी पत्रकार और समर्पित राष्ट्रसेवी श्री रामशंकर अग्निहोत्री का रायपुर में निधन हो गया। वह 'हिन्दुस्तान समाचार' (संवाद समिति) के सम्पादक रहे। 'राष्ट्रधर्म', 'तरुण भारत', 'पाञ्चजन्य' तथा 'आकाशवाणी' पत्र-पत्रिकाओं का दशकों तक सम्पादन किया। उन्होंने कश्मीर समस्या तथा डॉ० भीमराव अम्बेडकर के विचारों पर पुस्तकें लिखीं। उत्कृष्ट लेखन तथा पत्रकारिता के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

वरिष्ठ साहित्यकार
डॉ० रामगोपाल गोयल नहीं रहे

20 जून को वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० रामगोपाल गोयल का निधन हो गया। उन्होंने उपन्यास, काव्य, नाटक, निबन्ध तथा जीवनी-साहित्य विधाओं पर साहित्य सृजन किया। उनका उपन्यास 'धरती रही पुकार' तथा काव्य 'मंजिल के पंख' अत्यन्त चर्चित रहे। वे अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य एवं कला परिषद् के संस्थापक एवं अध्यक्ष रहे। उन्हें कई अकादमियों द्वारा तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया।

भारतीय वाङ्मय परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

अत्र-तत्र-सर्वत्र

हिन्दी भाषायी अल्पसंख्यक

पश्चिम बंगाल में सरकार प्रदेश में हिन्दीभाषियों की संख्या को नगण्य देखते हुए हिन्दीभाषियों को भाषायी अल्पसंख्यक का दर्जा देने जा रही है। इससे हिन्दी भाषा में चल रहे स्कूलों को सरकारी अनुदान तथा दूसरी अन्य सुविधाएँ मिल सकेंगी।

पढ़ने की क्षमता बढ़ाती हैं कहानियाँ

अगर बच्चा हर रात सोते वक्त 20 मिनट तक कहानियाँ पढ़ता है, तो उसकी पढ़ने की क्षमता में कम से कम 10 दिन स्कूल जाने के बराबर वृद्धि होगी। इस सिद्धान्त से प्रोत्साहित होकर अमेरिका के एक गैर सरकारी संगठन ने अभियान चलाया हुआ है, जिसके तहत संगठन बच्चों को रात में 20 मिनट तक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। इसके लिए एक प्रकाशन कम्पनी सोते समय सुनाई जा सकने वाली कहानियाँ प्रकाशित कर रही है।

'टिनटिन' का हिन्दी संस्करण

बेल्जियम की हास्य पुस्तक 'टिनटिन' के कार्टून पात्र अमेरिका और यूरोप के देशों में लोकप्रियता प्राप्त करने के बाद अब हिन्दी में आ रहे हैं। इस कार्टून हास्य पुस्तक में नायक अपने दोस्तों के माध्यम से रहस्यों की गुत्थियाँ सुलझाता है। इस पुस्तक में साहसिक कहानियाँ हैं, जो बच्चों के साथ बड़ों को भी प्रिय हैं।

ग्यारह साल की लेखिका

ईरान में ग्यारह साल की एक लड़की मेलिका गोली को सबसे कम उम्र की लेखिका तथा दानदाता के तौर पर देश की 'नेशनल रिकॉर्ड लिस्ट' में पंजीकृत किया गया है। उसे दुनिया की सबसे कम उम्र की लेखिका के तौर पर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लिए ईरान सरकार ने एक आधिकारिक अनुरोध भेजा है। मेलिका की चौदह किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनकी बिक्री से मिलने वाली राशि दुनियाभर के अनाथ बच्चों के लिए देने का ऐलान किया गया है।

विरोध के बावजूद बेची गईं टैगोर की रचनाएँ

कानूनी हक नहीं होने के कारण लन्दन में टैगोर के दुलर्भ चित्रों की नीलामी रोक नहीं पाई सरकार। भारत में हो रहा था इस नीलामी का विरोध।

भारत में विरोध प्रदर्शन के बावजूद गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 12 पेंटिंग यहाँ एक नीलामी घर में 16 लाख पाउण्ड में बेची गईं। हालाँकि पेंटिंग्स के खरीदारों की पहचान जाहिर नहीं की गई है।

सूथबी में मंगलवार को वार्षिक भारतीय कला बिक्री में टैगोर की रचनाएँ आकर्षण का केन्द्र थीं। प्रवक्ता के मुताबिक इनमें एक अनाम पेंटिंग 3,13,250 पाउण्ड में बिकी, जिसमें एक महिला की छवि है।

हिन्दी की सार्वभौमिकता

संसार के करीब 135 राष्ट्रों में तथा करीब 150 विश्वविद्यालयों में इस समय हिन्दी भाषा को पढ़ाया जा रहा है।

ग्रेट-ब्रिटेन में महारानी एलिज़ाबेथ के साथ हमारी महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने जब लन्दन के एक प्राइमरी स्कूल में भारतीय भाषा हिन्दी को अनिवार्य रूप से पढ़ाते हुए देखा तो गर्व से गद्गद् हो उठीं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्राध्यक्ष बिल क्लिंटन ने संस्कृत व हिन्दी भाषा के प्रति अपनी श्रद्धा व प्रगाढ़ आस्था व्यक्त की तो जार्ज बुश ने अमेरिकी बच्चों व व्यावसायिक तबकों से सम्बन्धित लोगों से, 'यदि वे भारतीय भाषा हिन्दी का समुचित परिज्ञान न रखते हों तो वैश्वीकरण की होड़ में पिछड़ भी सकते हैं, कहा था। और इस समय के राष्ट्राध्यक्ष बराक हुसैन ओबामा ने तो अमेरिकी स्कूलों में हिन्दी पढ़ाने हेतु कई हजार करोड़ डॉलर्स भी मंजूर कर दिया है। न केवल ग्रेट-ब्रिटेन, अमेरिका बल्कि रूस, जर्मन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और खाड़ी के देशों के साथ-साथ टिबेट, जापान, कोरिया के अतिरिक्त अब चीन में भी विश्व बाजारीकरण के चलते हिन्दी के सहज रूप से बढ़ते कदमों को देखा जा सकता है। हिन्दी भाषा अब अपनी शक्ति और बलबूते पर विश्व की भाषा बनने के पथ पर अग्रसर हो रही है।

भोपाल के हिन्दी भवन परिसर में नया पुस्तकालय भवन बनेगा

विभिन्न विषयों में नये तकनीकी ज्ञान का लाभ हिन्दी के माध्यम से नई पीढ़ी उठा सके इसके लिये हिन्दी का शब्द सामर्थ्य बढ़ाना अब अत्यन्त आवश्यक हो गया है। पूर्व में हिन्दी के लिये मानक शब्द कोश तैयार करने के लिये डॉ० रघुवीर की अध्यक्षता में भारत सरकार द्वारा जिस प्रकार की अधिकार सम्पन्न समिति गठित की गई थी वैसी ही एक और समिति गठित की जानी चाहिये। यह बात यहाँ हिन्दी भवन परिसर में 32 लाख रुपये की लागत से बनने वाले पण्डित मोतीलाल नेहरू स्मारक पुस्तकालय के नये भवन की आधारशिला रखते हुए पूर्व मुख्यमंत्री एवं सांसद कैलाश जोशी ने कही। शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता राज्यसभा सदस्य श्री रघुनंदन शर्मा ने की। श्री जोशी ने कहा कि एक तरफ विश्व के सैकड़ों देशों में हिन्दी का व्यापक प्रचार और अध्यापन हो रहा है वहीं दूसरी ओर भारत में केन्द्र और राज्य सरकारों के कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। यह राष्ट्रभाषा हिन्दी और भारतीय भाषाओं की प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ा खतरा है।

सिंगापुर में लोकप्रिय हो रही है हिन्दी

सिंगापुर में भाषा के रूप में हिन्दी सीखने की ललक तेजी से बढ़ रही है। हिन्दी सीखने वालों में से कुछ का मानना है कि इस भाषा को समझ कर वे बॉलीवुड संगीत का अधिक आनन्द ले पाएँगे, जबकि कुछ भारत के आर्थिक शक्ति के रूप में उदय के कारण इसे महत्त्वपूर्ण मानते हैं। सिंगापुर के शिक्षा मंत्री एन०ई०हेन ने यहाँ हिन्दी केन्द्र दिवस को सम्बोधित करते हुए कहा, ''यह निस्संदेह बॉलीवुड की बढ़ती लोकप्रियता का प्रमाण है। कुछ के लिए तो यह बॉलीवुड फिल्मों के लोकप्रिय गाने समझने का जरिया है। इसके अलावा इसकी सांस्कृतिक भूमिका भी है। बहरहाल, कई लोग मानते हैं कि हिन्दी एक आर्थिक सम्पदा है। खासकर भारत के उदय के कारण।'' हेन ने बताया कि चार और स्कूल इस साल हिन्दी पढ़ाने वाले कार्यक्रम में शामिल हो गए हैं, जिससे हिन्दी कक्षाओं वाले स्कूलों की संख्या बढ़कर 53 हो गई है। सिंगापुर में सात हिन्दी केन्द्र चलाए जा रहे हैं। इन केन्द्रों में नजदीक रहने वाले बच्चे हिन्दी सीखते हैं।

देश में प्रकाशन उद्योग

भारत में पुस्तक प्रकाशन उद्योग लगभग 80 अरब रुपये का है। हर साल सभी भाषाओं के 70 हजार टाइटल छपते हैं। इनमें से 30 फीसदी अंग्रेजी और इतना ही हिन्दी किताबों का हिस्सा है। जानकारी के अनुसार 30 फीसदी सालना की रफ्तार से बढ़ रहा है पुस्तक प्रकाशन उद्योग। वहीं भारत से होने वाला किताबों का निर्यात 460 करोड़ रुपये का है। इतनी तेजी से बढ़ रहे इस उद्योग की विकास गाथा का प्रमुख कारण पाठक ही हैं।

ब्रिटेन के अभिलेखागार में गाँधी के दुर्लभ पत्र

भारत विभाजन के पहले महात्मा गाँधी और लार्ड माउंटबेटन के बीच दीर्घकालिक वार्ता चली थी। इस दौरान राष्ट्रपिता ने कुछ हस्तलिखित नोट तैयार किया था जिसे अति महत्त्व के दस्तावेज का दर्जा देते हुए ब्रिटिश विरासत निधि ने सुरक्षित किया है। इस अभिलेखागार में लार्ड माउंटबेटन के नोट और दस्तावेज हैं। माउंटबेटन ने उन वार्ताओं में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिसके बाद भारत से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन समाप्त हुआ था। माउंटबेटन अन्तिम ब्रिटिश वायसराय तथा भारत के पहले गवर्नर जनरल थे। इन दस्तावेजों में गाँधी की ओर से माउंटबेटन को हस्तलिखित पत्र है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

'बिटिया है विशेष' पर परिचर्चा

मुजफ्फरपुर (बिहार) में स्थानीय गन्नीपुर स्थित स्काईलार्क पब्लिक स्कूल में मेकर संस्था के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में बिहार राज्य समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती सीता सिन्हा के सम्मान के साथ 'युवती संस्कार' के सन्दर्भ में लेखिका मृदुला सिन्हा की कृति 'बिटिया है विशेष' पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। उद्घाटन गुप्तेश्वर पाण्डेय ने किया।

व्याख्यान : कविता के जैवी धर्म

बीकानेर में स्थानीय संस्था 'समवेत' द्वारा संचालित हरीश भादानी सृजनपीठ द्वारा जनकवि हरीश भादानी की स्मृति में उनकी 78वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक व्याख्यान 'कविता के जैवी धर्म' का आयोजन किया। डॉ० नामवर सिंह ने व्याख्यान देते हुए कहा कि हरीश भादानी केवल कवि ही नहीं, बल्कि एक सुलझे हुए चिंतक और विचारक थे। हरीश भादानी ने 'यस सर' की संस्कृति के दौर में 'न' कहना सीखा। कविता का जो स्वधर्म भादानी ने समझाया है, वह है 'नहीं कहने की क्षमता।'

नाथद्वारा में ब्रजभाषा समारोह

नाथद्वारा। साहित्य मण्डल द्वारा प्रतिवर्ष की परम्परानुसार दो दिवसीय पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह का आयोजन किया गया। 'ब्रजलोक संस्कृति : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में' विषय पर केन्द्रित संगोष्ठी में मोहनस्वरूप भाटिया, डॉ० दाद़ूदयाल गुप्ता, बदनसिंह चौधरी, श्रीमती सुषमा शर्मा ने अपने विचार रखे। सूरसागर के द्वितीय खण्ड का लोकार्पण किया गया तथा अनेक विद्वानों को हिन्दी भाषा भूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया। समारोह में ब्रजभाषा कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

काशी का अस्सी : 'गल्पेतर गल्प का ठाठ'

उदयपुर। फतहसागर झील के किनारे स्थित बोगेनवेलिया आर्ट गैलरी परिसर में आयोजित कार्यक्रम में उदयपुर-साहित्य संस्कृति के संचयन 'बनास' के विशेषांक 'गल्पेतर गल्प का ठाठ', जो काशीनाथ सिंह के उपन्यास 'काशी का अस्सी' पर केन्द्रित है, का लोकार्पण चित्रकार परमानंद चोयल, चित्रकार अब्बास बाटलीवाला, कवि नंद चतुर्वेदी और समालोचक नवल किशोर ने किया।

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियाँ

शिलांग (मेघालय) में पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी के सौजन्य से नागरी लिपि परिषद्, दिल्ली द्वारा आयोजित कार्यक्रम में रमणिका गुप्ता द्वारा संकलित 'पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियाँ' का लोकार्पण डॉ० परमानंद पांचाल, डॉ० श्रीभगवान शर्मा, प्रो० दिनेश कुमार चौबे एवं सांसद डॉ० रामप्रकाश द्वारा किया गया।

अक्षर शिल्पी का बालसाहित्य विशेषांक लोकार्पित

भोपाल। सृजनात्मक अभिव्यक्ति की प्रमुख पत्रिका अक्षर शिल्पी का बालसाहित्य विशेषांक राजधानी के दुष्यंत संग्रहालय में लोकार्पित हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूलालजी गौर, मंत्री मध्यप्रदेश शासन व वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ० श्रीप्रसाद कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे।

डॉ० रामगोपाल वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ

डॉ० नरेन्द्र मोहन की अध्यक्षता एवं प्रसिद्ध गीतकार श्री बालस्वरूप 'राही' के मुख्य आतिथ्य में डॉ० रवि शर्मा 'मधुप' के अतिथि सम्पादन में 'कल्पान्त' पत्रिका द्वारा प्रकाशित बाल साहित्यकार 'डॉ० रामगोपाल वर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ' का लोकार्पण दिल्ली में किया गया। इस अवसर पर 'शब्द सेतु' के अध्यक्ष डॉ० हरीश नवल, डॉ० कमलकिशोर गोयनका आदि ने उद्बोधन दिये।

इण्डिया और भारत का अंतर्सम्बन्ध उलझन भरा है : नामवर सिंह

इण्डिया और भारत का अंतर्सम्बन्ध उलझन भरा रहा है। इण्डिया का रिश्ता सिंध की अवधारणा से रहा है। 'अहं राष्ट्रे संगमनी वसूनाम चिकितुषी' और 'महाभारत' जैसी कृति के नाम से भारत जुड़ा है। आज सिंधु शब्द से उद्भूत आशय निष्प्राण हो गया है। आज यह भूमण्डलीकरण की ओर ले जाने वाली अवधारणा का संकेतक है। उक्त बातें प्रसिद्ध समालोचक प्रो० नामवर सिंह ने कहीं। वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के अंग्रेजी विभाग की ओर से राधाकृष्णन सभागार में आयोजित 'भारत की परिकल्पना और राष्ट्र की अवधारणा का विमर्श' विषयक दो दिनी संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में बोल रहे थे।

सत्यजीत रे स्मृति व्याख्यान एवं फिल्म महोत्सव

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के पत्रकारिता एवं जनसंप्रेषण विभाग द्वारा कला संकाय प्रेक्षागृह में दो दिवसीय 'सत्यजीत रे स्मृति व्याख्यान एवं फिल्म महोत्सव' का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन करते हुए ख्यात फिल्म निर्माता निर्देशक श्याम बेनेगल ने कहा कि फिल्में कल्पनाओं से जुड़ी होती हैं लेकिन इनमें परम्परा और वास्तविकता की छवि भी दिखनी चाहिए।

इस अवसर पर श्याम बेनेगल ने सत्यजीत रे पर आधारित एक स्मारिका का विमोचन किया। अध्यक्षता कला संकाय के प्रमुख प्रो० कमलशील ने की। इस अवसर पर सत्यजीत रे की 'पोस्टर मास्टर', 'प्रतिद्वंद्वी', 'शतरंज के खिलाड़ी' सर्गेई आइंस्टाइन की 'अक्टूबर', इंगमार बर्गमेन की 'वाइल्ड स्ट्रॉबेरी' फिल्में दिखाई गयीं।

पत्रिकाएँ हमारी साहित्यिक समृद्धि का प्रतीक हैं

साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था 'वयम्' के तत्त्वावधान में संस्था की छठवीं वर्षगांठ पर खरगोन (म०प्र०) में आयोजित हिन्दी साहित्यिक पत्रिका प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ख्यात कहानीकार भालचन्द्र जोशी ने अपने उद्बोधन में कहा कि ''हिन्दी में आज भी आकृष्ट और रुचिपूर्ण साहित्यिक पत्रिकाओं की अच्छी खासी तादाद है। हालाँकि इनकी संख्या और पाठक संख्या का अन्तर चौंकाने वाला है, लेकिन फिर भी ये आश्वस्त करती हैं कि हिन्दी में भी इन दिनों खूब रचनात्मक और मौलिक लिखा जा रहा है।'' अध्यक्ष श्री सुनील गीते ने हिन्दी समाज और पत्रिकाओं में पाठकों की घटती संख्या पर चिंता प्रकट करते हुए कहा कि इतनी मात्रा में पत्रिकाएँ देश भर से आ रही हैं फिर भी छोटे शहरों के पाठकों तक नहीं पहुँच पा रही हैं, यह एक बड़ी चिन्ता का विषय है। युवा कवि और इस प्रदर्शनी के संयोजक प्रदीप जिलवाने ने इस अवसर पर कहा कि पत्रिकाएँ हमारी साहित्यिक समृद्धि का प्रतीक हैं। वे भाषा की अस्मिता को बचाए रखने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभा रही हैं। संस्था द्वारा वरिष्ठ कवि तुकाराम गोयल के पुत्र शुभेन्दु गोयल की स्मृति में स्थापित द्वितीय 'वयम्' सम्मान इंदौर के वरिष्ठ कवि श्री कृष्णकांत निलोसे को प्रदान किया गया एवं श्री गोयल के निमाडी कविता संग्रह 'रात बिरात' का विमोचन किया गया।

मंटो और ज़ाहिदा हिना की पुस्तकों का विमोचन

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के लखनऊ केन्द्र में 'साझी दुनिया' के तत्वावधान में सआदत हसन मंटो की 'गुनहगार मंटो' तथा ज़ाहिदा हिना की पुस्तक 'पाकिस्तानी स्त्री-यातना और संघर्ष' का विमोचन सम्पन्न हुआ। उर्दू से हिन्दी में इनका अनुवाद शकील सिद्दीकी ने किया है। मूल रूप में ये पुस्तकें 'लज़्ज़ते संग' और 'औरत-ज़िन्दगी का ज़िन्दा' नाम से चर्चित हैं। मंटों की पुस्तक का विमोचन कामतानाथ ने एवं ज़ाहिदा हिना की पुस्तक का विमोचन रवीन्द्र वर्मा ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो० शारिब रूदौलिवी ने की।

लखनऊ में पुस्तक लोकार्पण

'किताबें इंसान में सही-गलत का फैसला करने की क्षमता पैदा करती हैं'—यह उद्गार थे श्री बी०आर० त्रिपाठी, मुख्य कस्टम कमिश्नर के, जो शहीद स्मारक व स्वतन्त्रता संग्राम शोध केन्द्र,

लखनऊ में आयोजित लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि की हैसियत से बोल रहे थे। भारत की आजादी के प्रथम संग्राम 1857 की स्मृति में आयोजित इस कार्यक्रम में नेशनल बुक ट्रस्ट की तीन पुस्तकों 'फ्रांस की क्रान्ति' (प्रमोद कुमार), 'नदी किनारे वाली चिड़िया' (विनायक) और 'गन्ना' (डॉ० ए०के० श्रीवास्तव) का लोकार्पण हुआ। इस समारोह में प्रख्यात लेखक श्री कामतानाथ तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर जे०पी० मिश्रा बतौर अतिथि शामिल हुए।

काव्यानुवाद पर संगोष्ठी

जमशेदपुर में निखिल भारत वंग साहित्य सम्मेलन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय कविता वाचन दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, विषय था—काव्यानुवाद की समस्या।

मुख्य अतिथि वरिष्ठ हिन्दी साहित्यकार डॉ० बच्चन पाठक 'सलिल' ने कहा कि एक भाषा की कविता का अन्य भाषा में अनुवाद एक कठिन कार्य है। भारतीय कविताओं का अंग्रेजी अनुवाद रूढ़ियों, प्रतीकों और सांस्कृतिक वैशिष्ट्यों के चलते अत्यन्त कठिन हो जाता है। श्लेष और यमक का सौन्दर्य तो नष्ट हो ही जाता है, अनुवादक को केवल इतना ध्यान रखना चाहिए 'अन्यूनं नातिरिक्तं च।'

संगोष्ठी के अध्यक्ष श्री सुदीप्त मुखर्जी ने कहा कि अनुवादक को अलंकारों का व्यामोह नहीं होना चाहिए। इस अवसर पर रवीन्द्रनाथ की विभिन्न कविताओं के अनुवाद हिन्दी, भोजपुरी, उड़िया, अंग्रेजी, गुजराती और मराठी में विभिन्न अनुवादकों द्वारा प्रस्तुत किए गए।

चार पुस्तकों का लोकार्पण

विगत दिनों वाराणसी स्थित श्री विहारम् के अमरा बापू सभागार में संत साहित्य पर सद्यः प्रकाशित चार पुस्तकों प्रो० बलदेव वंशी द्वारा रचित—'सात भारतीय संत', 'संत कवि मलूकदास', 'भारतीय संत परम्परा' और डॉ० उदयप्रताप सिंह की पुस्तक 'संतों के संत कवि रामानंद' का लोकार्पण ज०गु०रा० श्री रामनरेशाचार्य जी के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

हौसलों और उम्मीदों के गीत

''जिसको सदियों तक ज़माना, झूमकर दोहराएगा, जिन्दगी के नाम ऐसा गीत लिख जाएँगे हम...''। हौसलों और उम्मीदों का पैगाम देता मशहूर कवि-ग़ज़लकार विनोद तिवारी का यह नगमा जब संगीत के सुर-ताल का तानाबाना लिए गूँजा तो माहौल में कविता की खुशबूदार रंगतें बिखर गईं। श्री तिवारी के ऐसे ही कुछ गीतों को आईसेक्ट स्टूडियो ने मुकम्मल धुनों से सजाकर ऑडियो अलबम 'कुछ गीत जिन्दगी के नाम' की शक्ल में जारी किया। वनमाली सृजन पीठ के अरेरा कॉलोनी स्थित अध्ययन केन्द्र में आयोजित इस गरिमामय समारोह में डॉ० सी०वी० रमन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति तथा प्रसिद्ध कथाकार-कवि श्री संतोष चौबे, आलोचक प्रो० कमला प्रसाद, कवि नाटककार राजेश जोशी, समीक्षक रामप्रकाश त्रिपाठी, कहानीकार मुकेश वर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे।

महान साहित्य साधकों की कर्मस्थली है काशी

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान तथा साहित्य संघ, वाराणसी के संयुक्त तत्वावधान में पराड़कर भवन में आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन तथा 'सोच विचार' मासिक पत्रिका के काशी अंक के लोकार्पण समारोह के अध्यक्ष के रूप में विचार व्यक्त करते हुए नवनीत के सम्पादक कवि विश्वनाथ सचदेव ने कहा कि देश की सांस्कृतिक राजधानी काशी महान साहित्य साधकों की कर्मस्थली रही है। इस नगरी ने अंधकार की परतों को भेदकर सदैव प्रकाश का मार्ग दिखलाया है और आज भी 'सोच विचार' जैसी पत्रिका उस परम्परा की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में हमारे सामने है।

'काशी की साहित्य परम्परा' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए प्रख्यात साहित्यकार मनु शर्मा ने कहा कि काशी की साहित्यिक परम्परा जीवन को टुकड़ों में बाँट कर देखने की नहीं अपितु उसको समग्रता में देखने की रही है। उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष गोपाल चतुर्वेदी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि संस्थान का उद्देश्य भाषा और साहित्य को केन्द्र में रखते हुए सामाजिक समरसता, सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के वातावरण का निर्माण एवं विकास करना है।

जगदीश किंजल्क की पुस्तक का लोकार्पण

अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन का बाईसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन विगत 10 और 11 जुलाई को भोपाल (मध्य प्रदेश) में पूरी गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'दिव्यालोक' के सम्पादक एवं वरिष्ठ साहित्यकार श्री जगदीश किंजल्क की सद्यः प्रकाशित कृति 'मध्य प्रदेश की जनपदीय कहावतें : बुंदेलखण्ड' का लोकार्पण मध्य प्रदेश शासन के संस्कृति एवं जनसम्पर्क मंत्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने किया। इसका प्रकाशन मध्य प्रदेश आदिवासी कला परिषद्, भोपाल द्वारा किया गया है। इस ग्रन्थ में लगभग दो हजार कहावतों का संकलन किया गया है।

साहित्य-संगोष्ठी में कवीन्द्र रवीन्द्र को श्रद्धा-सुमन समर्पित

साहित्यानुशीलन समिति के तत्त्वावधान में साहित्य-संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध साहित्यसेवी एवं उद्योगपति श्रीयुत बालकृष्ण गोयन्का ने की। इस अवसर पर विश्वकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनकी 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। डॉ० सुब्रह्मण्यम् विष्णुप्रिया ने श्रद्धेय कवीन्द्र की कृष्ण-लीला सम्बन्धित कृति 'भानुसिंह ठाकुरेर पदावली' के कुछ मनभावन अंशों का पाठ किया। डॉ० एम० शेषन् ने सत्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध वाग्गेयकार एवं कृष्णभक्त कवि वेंकटसुब्बय्यर के रचनात्मक योगदान पर प्रकाश डाला। डॉ० निर्मला मौर्य ने भक्त कवि सूरदास के वात्सल्य वर्णन पर तथा हर्षलता शाह ने भक्त कवि नरसी मेहता के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एवं डॉ० अशोककुमार द्विवेदी ने भारतेन्दु के कृष्ण-चित्रण पर अपना विवेचनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया। विद्वान् समीक्षकों को अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

सांसारिक कचरे में पड़े हीरा थे प्रो० शुकदेव

प्रो० शुकदेव सिंह साहित्य जगत के हीरा थे, जो सांसारिक कचरे में खो गया था। यह बात वैद्य पं० शिवकुमार शास्त्री ने कही। वह नागरी प्रचारिणी सभा में कबीर विवेक परिवार द्वारा आयोजित जयंती समारोह में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रो० सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके उचित मूल्यांकन की जरूरत है। साहित्य के नवरस ही नहीं व्यंजना के षड्रस के आस्वाद के पारखी थे। कबीरचौरा मूलगादी पीठाधीश्वर संत विवेक दास आचार्य ने कहा कि वह अत्यन्त परिष्कृत रुचि के व्यक्ति थे। उनकी कार्यक्षमता अद्वितीय थी। इस अवसर पर प्रो० रमाशंकर शुक्ल को सम्मानित किया गया।

लोकार्पण एवं बालसाहित्य संगोष्ठी सम्पन्न

बालसाहित्य की सम्पूर्ण पत्रिका 'बालवाटिका' के जुलाई अंक का लोकार्पण एवं बालसाहित्य संगोष्ठी का आयोजन 'बालवाटिका' एवं करवट कला परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में 11 जुलाई को भोपाल में किया गया।

मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल के मायाराम सुरजन स्मृति भवन के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० देवेन्द्र दीपक, पूर्व निदेशक, मध्य प्रदेश साहित्य परिषद्, भोपाल ने की तथा मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध वरिष्ठ बालसाहित्यकार डॉ० श्रीप्रसाद थे।

वी० राजेश की पुस्तक का लोकार्पण

चेन्नई में आयोजित विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत वी० राजेश की पुस्तक 'दी इण्डियन रिटेल्स' का लोकार्पण प्रसिद्ध उद्योगपति श्री पी०के० महापात्र ने किया। श्री महापात्र को 'रिटेल' क्षेत्र का जनक भी कहा जाता है।

डॉ० मंगलमूर्ति की पुस्तक का लोकार्पण

डॉ० मंगलमूर्ति की नई पुस्तक 'बाबू जगजीवन राम : एक जीवनी' का लोकार्पण कुछ

दिनों पहले नई दिल्ली में मानव संसाधन मंत्री कपिल सिब्बल ने किया।

बाबू जगजीवन राम के व्यक्तित्व के बारे में उनकी पुत्री और लोकसभाध्यक्ष मीरा कुमार ने टिप्पणी लिखी है। राजेन्द्र भवन ट्रस्ट (नई दिल्ली) के सहयोग से पुस्तक का प्रकाशन अनामिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स ने किया है। इस पुस्तक में बाबू जगजीवन राम और बनारस से उनके सम्बन्ध को विस्तार से बताया गया है।

'चलता चला जाऊँगा' लोकार्पित

दिल्ली। 21 जून को स्व० विष्णु प्रभारकजी के 99वें जन्मदिवस पर उनके द्वारा रचित कविताओं के एकमात्र संकलन 'चलता चला जाऊँगा' का लोकार्पण सर्वश्री अजित कुमार, बलदेव वंशी, कृष्णदत्त पालीवाल, हरदयाल, महेश दर्पण, सुरेन्द्र शर्मा, शमशेर अहमद, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी आदि के सान्निध्य में हिन्दी भवन के संगोष्ठी कक्ष में किया गया। कविताओं का संकलन विष्णुजी के पुत्र श्री अतुल कुमार ने किया है और इसका प्रकाशन प्रभात प्रकाशन द्वारा किया गया है।

'खलिश' (तेरी आवाज, मेरे अल्फाज) लोकार्पित

5 जून को त्रिवेणी कला संगम, मंडी हाउस, नई दिल्ली में कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल एवं 'साहित्य अमृत' के सम्पादक श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, सर्वश्री रवीन्द्र कालिया, चित्रा मुद्‌गल, अमरनाथ 'अमर', लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, ब्रजेंद्र त्रिपाठी, शिवनारायण सिंह, हिमांशु जोशी, श्वेता शर्मा एवं विवेक गौतम ने युवा कवि श्री दीपक शर्मा की काव्यकृति 'खलिश' (तेरी आवाज, मेरे अल्फाज) का लोकार्पण संयुक्त रूप से किया।

चार पुस्तकें लोकार्पित

विगत दिनों डॉ० हर्षनंदिनी भाटिया एवं डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया की चार पुस्तकों का लोकार्पण अलीगढ़ में सम्पन्न हुआ। डॉ० हर्षनंदिनी भाटिया की पुस्तकों 'बृजनिधि लोककलाश्री' और 'पत्र सुरभि' तथा डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया की पुस्तकों 'लोक-भाषा' और 'आधुनिक हिन्दी साहित्यकार' का लोकार्पण मुख्य अतिथि सर्वश्री कुंदनलाल उप्रेती, नमिता सिंह, नजीर मोहम्मद ने संयुक्त रूप से किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन आयोजित

22 से 24 मई तक शैक्षिक एवं साहित्यिक संस्था पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी एवं उत्तर-पूर्वी परिषद् (भारत सरकार) के संयुक्त तत्त्वावधान में तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन शिलाँग में किया गया।

उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री प्रमोदप्रसाद श्रीवास्तव ने की। डॉ० अरुणा उपाध्याय ने समारोह की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर मंचस्थ अतिथियों ने 'शुभ तारिका' के 'डॉ० कृष्णांक 9' एवं स्मारिका 2010 'पूर्वोत्तर वार्त्ता' का लोकार्पण किया। द्वितीय सत्र में बहुभाषी काव्यगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० जगदीश चन्द्र चौरे ने की। दोनों सत्रों के मुख्य अतिथि श्री अतुल कुमार माथुर थे।

23 मई को तृतीय सत्र में 'पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी का विकास' विषय पर डॉ० बोढ़न मेहता बिहारी की अध्यक्षता में संगोष्ठी सम्पन्न हुई। मुख्य अतिथि श्री क्षीरदा कुमार शइकिया थे। लगभग इक्कीस वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। चतुर्थ सत्र में अखिल भारतीय हिन्दी लेखक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो० प्रमोद टण्डन थे। श्रीमती उर्मि कृष्ण को 'श्री केशरदेव बजाज स्मृति सम्मान' एवं श्री अतुलकुमार माथुर को 'श्री जीवनराम मुंगी देवा गोयनका स्मृति सम्मान' तथा सर्वश्री शंकरलाल गोयनका, उमाकांत खुबालकर, विद्याशंकर शुक्ल एवं चन्द्रभूषण को 'पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी सम्मान 2009' से सम्मानित किया गया।

अनुवाद कला कौशल शिविर सम्पन्न

20 से 24 जून तक लेह (लद्‌दाख) में महिला भारतीय भाषा एवं साक्षरता संस्थान के तत्त्वावधान में 'अनुवाद कला कौशल शिविर' आयोजित किया गया। शिविर में सर्वश्री सोमदत्त दीक्षित, रजनी सिंह, मधु बरुआ सहित अनेक हिन्दी प्रचारक-प्रसारक एवं बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लेह के एक्जीक्यूटिव काउंसलर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में बुद्धिष्ट शिक्षा संस्थान के प्राचार्य उपस्थित थे।

हिन्दी सेवी महासंघ का अधिवेशन सम्पन्न

27 जून को अंजुमन खैरुल इसलाम एजुकेशन सोसाइटी द्वारा पुणे के पूजा कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस व कॉमर्स महाविद्यालय में राष्ट्रीय हिन्दी सेवी महासंघ का पंचम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ० आफताब अनवर शेख ने स्वागत भाषण दिया। महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्‌दीन नियाज मुहम्मद शेख ने अपने विचार व्यक्त किए एवं महासचिव श्री राज केसरवानी ने महासंघ के उद्‌देश्यों पर प्रकाश डाला। अधिवेशन का उद्‌घाटन श्री सुनील देवधर ने किया। मुख्य अतिथि श्री जी०जी० पटके थे। 'हिन्दी के विकास की दिशाएँ' तथा 'वैश्वीकरण और बाजारवाद के दौर में भाषाई प्रभाव' विषय पर आयोजित चिंतन सत्र में विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। समापन सत्र में हिन्दी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए करीब चालीस विद्वानों को स्मृति-चिह्न, सम्मान-पत्र व पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर महासंघ की पत्रिका 'वाग्धारा' के पुणे अधिवेशन विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया।

'प्रभाष परम्परा न्यास' का आयोजन सम्पन्न

15 जुलाई को 'प्रभाष परम्परा न्यास' की ओर से नई दिल्ली स्थित गाँधी दर्शन में स्व० श्री प्रभाष जोशी के जन्मदिवस पर उनकी स्मृति में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने स्व० जोशी को महात्मा गाँधी के साथ जोड़ते हुए कहा कि गाँधीजी ने जिस भारत का सपना देखा था, वैसे ही भारत का सपना जोशीजी ने भी देखा था। प्रभात खबर के सम्पादक श्री हरिवंश ने कहा कि जोशीजी ऐसे सम्पादक थे, जो देश के कोने-कोने तक जाकर प्रतिभा खोजकर लाते थे। इस अवसर पर प्रभाषजी की तीन पुस्तकों '21वीं सदी : पहला दशक', 'आगे अँधी गली है' तथा 'मसि कागद' के नए संस्करण का लोकार्पण अलग-अलग विद्वानों ने किया।

प्रेमचंद जयन्ती पर काशी विद्यापीठ में आयोजित समारोह

वाराणसी। प्रेमचंद जयन्ती के अवसर पर आयोजित गोष्ठी में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के मानविकी संकायाध्यक्ष प्रोफेसर अजीज हैदर ने कहा कि ''मुंशी प्रेमचंद भारतीय साहित्य के अनोखे रचनाकार थे जिन्हें पूरी कुदरत हासिल थी। वे बदलाव के हिमायती थे।'' इस अवसर पर विश्वविद्यालय शिक्षक संघ अध्यक्ष प्रो० श्रीनिवास ओझा, प्रो० श्रद्धानन्द, प्रो० सत्यदेव त्रिपाठी, प्रो० रघुवीर सिंह तोमर, डॉ० निरंजन सहाय ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संचालन डॉ० शिवकुमार मिश्र ने किया।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

पुस्तक परिचय

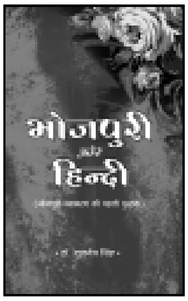

भोजपुरी और हिन्दी

डॉ० शुकदेव सिंह

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 292

सजि. : रु० 275.00 ISBN : 978-81-7124-671-7
अजि. : रु० 175.00 ISBN : 978-81-7124-672-4
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भोजपुरी का सीधा सम्बन्ध लोक जीवन से है। पूर्वी उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बिहार या उससे आगे के विस्तृत क्षेत्र में रहने वाले लोगों के जीवन में भोजपुरी रची-बची है। शब्दों, लोकोक्तियों और मुहावरों के मामले में हिन्दी से भी ज्यादा समृद्ध है भोजपुरी। इसी से बोलचाल के देशज शब्दों को लेकर हिन्दी ने अपना खजाना भरा है और भरती जा रही है। हाँ, कुछ लेखक अवश्य ऐसे हैं जो अंग्रेजी के शब्दों का तो धड़ल्ले से प्रयोग करते हैं लेकिन देशज शब्दों से परहेज करते हैं। भोजपुरी के कुछ शब्द और कुछ लोकोक्तियाँ ऐसे सटीक अर्थ देती हैं, जो किसी भाषा में नसीब न हो। लेकिन चिन्ता की बात यह है कि विकास और शहरीकरण के कारण भोजपुरी की शब्द-सम्पदा धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। नयी पीढ़ी के युवक तो गिटपिटिया अंग्रेजी में बोलने में गर्व महसूस करते हैं। उन्हें भोजपुरी बोलने में हीनता महसूस होती है जबकि उनका जन्म भोजपुरी धरती और परिवेश में हुआ रहता है।

हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान डॉ० शुकदेव सिंह ने भोजपुरी के उन शब्दों, लोकोक्तियों और मुहावरों को सहेजने का प्रयास इस पुस्तक में किया है जो या तो विलुप्त हो गए हैं या विलुप्त होने की कगार पर खड़े हैं। लोक जीवन ने रोजमर्रा की जिन्दगी में प्रयुक्त होने वाले ऐसे-ऐसे शब्द गढ़े हैं कि उनकी मेधा और क्षमता पर आश्चर्य होता है। इन शब्दों से हिन्दी को व्यापक समृद्धि मिल सकती है। यह पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक सार्थक और कारगर प्रयास है जो निश्चित रूप से हिन्दी के अध्येताओं, रचनाकारों और लेखकों के लिए उपयोगी तो सिद्ध होगा ही, हमें अरबी, फारसी और अंग्रेजी भाषाओं की तरफ टकटकी लगाने की बजाय अपनी बोलियों को टटोलने की प्रेरणा भी देगा।

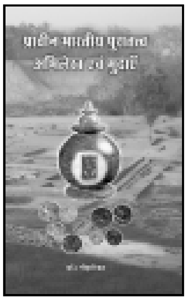

प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ

डॉ० नीहारिका

द्वितीय संस्करण : 2007 ई.

पृष्ठ : 316 + 8 पेज चित्र (सिक्के)

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 81-7124-388-6
अजि. : रु० 150.00 ISBN : 81-7124-391-6
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'प्राचीन भारतीय पुरातत्त्व, अभिलेख एवं मुद्राएँ' पुस्तक अपने नाम के अनुरूप इतिहास के तीन आधार स्तम्भों को अपने कलेवर में समेटे है। इतिहास की पुनर्रचना एवं लेखन में पुरातत्त्व के साथ ही अभिलेखों और मुद्राओं का महत्त्व सर्वविदित है। इन तीनों विधाओं का समग्र रूप इस पुस्तक में सम्मिलित है। पुरातत्त्व का योगदान विश्व परिदृश्य पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और भारत में भी इसका महत्त्व असंदिग्ध है। अभिलेखों और सिक्कों का महत्त्व इस सन्दर्भ में अकथनीय है। महान सम्राट अशोक के विचारों, कार्यों और उसकी महान उपलब्धियों पर अभिलेखों द्वारा जो प्रकाश पड़ता है, वह अन्य किसी भी साधन द्वारा सम्भव नहीं है। आहत एवं ढलुआं सिक्कों से प्राप्त अनेकानेक राजाओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र साधन सिक्के ही हैं। किन्तु यह इतिहास के विद्यार्थियों का दुर्भाग्य ही है कि इन विषयों पर हिन्दी भाषा में स्तरीय ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। यह उनकी अध्ययन एवं जिज्ञासा-पिपासा की तुष्टि के लिए विकट बाधा है। पुरातत्त्व सम्बन्धी अधिकांश ग्रन्थ आंग्ल भाषा में होने के साथ ही विभिन्न उत्खनित स्थलों की रपट के रूप में प्राप्त होते हैं। स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थी के लिए एक-एक उत्खनित स्थल की रपट पढ़ पाना एवं उसको आत्मसात कर पाना प्राय: सम्भव नहीं हो पाता। अभिलेखों और सिक्कों पर भी पुस्तकें बहुत सीमित हैं। पुरातत्त्व, अभिलेख एवं सिक्के ये तीनों एक साथ समग्र रूप से एक ही पुस्तक में नहीं सुलभ हो पाते हैं। लेखिका डॉ० नीहारिका ने इस अभाव की पूर्ति के लिए अत्यन्त श्रम व सावधानीपूर्वक इस पुस्तक की रचना की है। यह पुस्तक लेखिका के गहन अध्ययन, अध्यवसाय, सूझ-बूझ, लेखन-क्षमता की परिचायक है। पूरे विषय को बोधगम्य बनाने के लिए छायाचित्रों व रेखाचित्रों का भी प्रतुल समायोजन किया गया है।

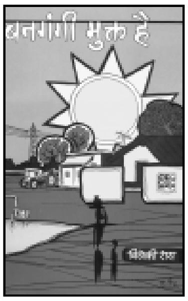

बनगंगी मुक्त है

(उपन्यास)

विवेकी राय

द्वितीय संस्करण : 2010 ई.

पृष्ठ : 120

सजि. : रु० 60.00 ISBN : 978-81-7124-757-8
अजि. : रु० 30.00 ISBN : 978-81-7124-758-5
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ग्राम-जीवन के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध लेखक की कलम की करामात **बनगंगी मुक्त है** में नयी खेती, चकबंदी, ग्रामसभा का चुनाव और स्वातंत्र्योत्तर गिरावट की पृष्ठभूमि में समग्र नये ग्राम परिवेश की जिस विराट परिकल्पना की बुनावट लेखक ने कर डाली है, वह अद्‌भुत है।

कहानी रामपुर गाँव के एक प्रतिष्ठित किसान परिवार की है, जिसके तीन सगे भाइयों में मझला त्रिभुवननाथ ग्राम-सभापति है तथा उसने अवैध रूप से चकबंदी में गाँव का सार्वजनिक पोखरा बनगंगी और उस पर स्थित धर्मशाला को हड़प लिया है। पूरे उपन्यास में संघर्ष का यही मूल मुद्दा है। धर्मशाला के साथ गाँव का एक गाँधी पुस्तकालय भी सभापति अपने कब्जे में कर लेता है। स्वराज्य के बाद उभरे प्रजातांत्रिक मूल्यों का यहाँ ग्राम भूमि पर जिस प्रकार अवमूल्यन होता है, पूरा उपन्यास इसी पीड़ा-व्यथा से परिपूर्ण है। आश्चर्यजनक संयमन और सन्तुलन के साथ एक चुस्त और कसी हुई पारिवारिक कथा आदि से अन्त तक बिना बिखराव के चलती है।

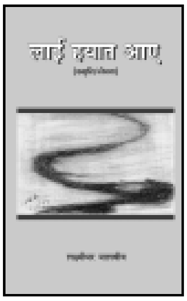

लाई हयात आए

(स्मृति/लेखा)

लेखक
लक्ष्मीधर मालवीय

क्राउन अठपेजी

पृष्ठ : 216

सजि. : रु० 280.00 ISBN : 81-7124-369-X
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

व्यक्तिगत संस्मरणों तथा विचारोत्तेजक लेखों के इस अनोखे संगम में हैं बहुरंगी चरित्र। परिवार, राजनीतिक-सामाजिक कार्यों के केन्द्र में, देश के प्रति प्रसिद्ध व्यक्तियों का सम्पर्क लेखक को बचपन के दिनों ही से मिला। महामना मालवीय के परिवार के अब तक अज्ञात प्रसंग : बाबू शिवप्रसाद गुप्त, राय कृष्णदास, पण्डित ब्रजमोहन व्यास आदि

अपने-अपने कार्यक्षेत्र में अप्रतिम व्यक्ति एक ओर, तो दूसरे छोर पर गुमनामी में वर्षों श्मशान की बारादरी में पड़े हुए लुप्त हो जाने को अभिशप्त, लेखक के विचक्षण कवि-मित्र, अथवा एक प्रिय जापानी सहयोगी—क्या उन्होंने आत्महत्या की? कहाँ पर? उनका तो शव भी न मिला।

असाधारण कर दिखाने की ललक, लेखक ने अनुसंधान की अटपटी राह चुनी, लुप्तप्राय प्राचीन कवियों की काया को पुनर्जीवित करने की। बनारस से बीकानेर तक, पूरे उत्तर भारत का चप्पा-चप्पा छान मारने का वृत्तांत एक खोजी की कहानी है।

बसा-बसाया अपना घर-द्वार छोड़कर किस लिए चल दिया वह, बाहर! माता ने कहा, 'कस्तूरीमृग!' उसने उत्तर दिया, "यह ताल मुझे छोटा लगता है!" होगा! "देखो, हमारे देश को कीड़े कहाँ लगे हैं! हिन्दी सड़ क्यों गई है! यह पचास करोड़ मनुष्य को गूँगा बना रही है! प्रमाण क्या अब भी चाहिए?"

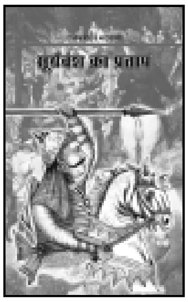

सूर्यवंश का प्रताप

(प्रात: स्मरणीय महाराणा प्रताप के जीवन-संघर्ष पर आधृत उपन्यास)

राजेन्द्रमोहन भटनागर

पृष्ठ : 192

सजि. : रु० 180.00

ISBN : 81-902534-6-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महाराणा प्रताप ऐसे मानव थे जो अपने अस्तित्व को तिरोहित नहीं होने देना चाहते थे। उनका संघर्ष हर उस सच्चे और निष्ठावान् मानव का संघर्ष है जो उसे मानव होने के लिए सिद्ध करना होता है। हर एक का अपना अस्तित्व है। जब हर एक के अस्तित्व-बिम्ब को एक आँधी उखाड़ फेंकना चाहती है तब सहज महाराणा प्रताप की याद आने लगती है। वस्तुत: वह हमारे दुर्धर्ष संघर्ष, समर्पण और पराक्रम की अपूर्व धरोहर है। वह ऐसा इतिहास है जो कभी मर नहीं सकता। ऐसे भी अनेक प्रयास हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे जो महाराणा प्रताप की गरिमा को सन्देह की शय्या पर सुलाना चाहेंगे। वे यह भूल गये हैं कि अब महाराणा प्रताप का इतिहास मानव-जीवन का पर्याय बन चुका है और अब कोई भी ऐतिहासिक खोज उसे प्राप्त प्रतिष्ठा से अपदस्थ नहीं कर सकती।

महाराणा प्रताप तत्कालीन जनजीवन का प्रतीक हैं। महाराणा प्रताप ने उदयसिंह के समय से उपेक्षा पायी थी और निरन्तर वह तकलीफों से घिरे रहे थे। हर बार सह-अस्तित्व की पहचान बनाये रखने के लिए, उन्हें जन-बल का आश्रय लेना पड़ा था, इसलिए सम्राट् होकर भी अकबर महाराणा प्रताप के जीते जी मेवाड़ को नहीं जीत सके और न कभी वे मेवाड़ के जनजीवन की प्राणशक्ति बन सके। यह गहरी वेदना उन्हें अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक सालती रही। यही तो वह कारण है जो महाराणा प्रताप को सम्राट् अकबर की संघर्ष-शैली से सम्पृक्त करता है और मानव-तुला पर उन्हें बहुत पीछे छोड़ जाता है। मेवाड़ का अस्तित्व सूर्य उनके समय इसलिए तिरोहित नहीं हुआ क्योंकि मेवाड़ का अस्तित्व मात्र प्रताप नहीं था प्रत्युत् समूचा जनजीवन था।

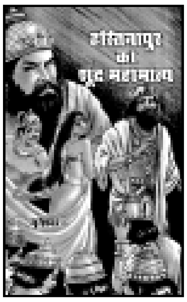

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य

(पौराणिक उपन्यास)

युगेश्वर

पृष्ठ : 160

सजि. : रु० 140.00

ISBN : 81-7124-266-9

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

महाभारत में नीतिशास्त्र के सबसे महत्त्वपूर्ण वक्ता विदुर हैं। कौरव कुल के महामात्य विदुर शूद्र शरीर में धर्म के अवतार हैं। कौरवों के महामात्य होकर भी वे महाभारत युद्ध से अलग हैं। हर क्षण सत्य बोलते हैं, सत्य करते हैं। युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र एवं श्रीकृष्ण समान भाव से उन पर विश्वास करते हैं। न चाह कर भी दुर्योधन उन्हें बर्दाश्त करता है। उन्होंने लाक्षागृह में जलने से पाण्डवों की रक्षा की थी। द्यूत की निन्दा की थी। दुर्योधन को बार-बार डाँटा था। धृतराष्ट्र को उत्तम सलाह दी थी—वे दुर्योधन का परित्याग करें, यह कुल नाशक है।

विदुर ने कभी, किसी भी स्तर का शस्त्र नहीं ग्रहण किया। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व अहिंसक सत्याग्रही का है। इस महान अहिंसक योद्धा, शूद्र महामात्य एवं सत्याग्रही की कथा भारतीय राजनीति और सामाजिक जीवन को दिशा देती है।

वटवृक्ष की छाया में

कुमुद नागर

पृष्ठ : 168

सजि. : रु० 190.00

ISBN : 81-7124-346-0

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कुमुद नागर की 'वटवृक्ष की छाया में' एक ओर नागर परिवार की चार पीढ़ियों की गाथा है, दूसरी ओर पिता श्री अमृतलाल नागर की जीवन-कथा, जो कुमुदजी ने एक भावुक पुत्र की भाँति नहीं, बल्कि एक संवेदनशील कलाकार की हैसियत से लिखी है। नागरजी की रचनात्मक ऊर्जा, पारिवारिक इंटरएक्शन और घरेलू समस्याओं के साथ संघर्षण में उपजती रही है। घर्षण का प्रभाव जिस प्रकार नागरजी पर पड़ा, उसी प्रकार परिवार पर पड़ना भी स्वाभाविक था। यह प्रभाव परिवार ने किस प्रकार ग्रहण किये, उनके परिप्रेक्ष्य में नागरजी की क्या छवि उभरती है। यह पुस्तक उसे रेखांकित करती है। अपने आप में यह अत्यन्त रोचक और कहीं-कहीं बहुत विचलित कर देनेवाला लेखन है; खासतौर से वह पक्ष जो परम प्रतिभाशाली रचनाकारों और कलाकारों के तनाव और संघर्ष को उजागर करता है।

'वटवृक्ष की छाया में' हिन्दी के सामान्य पाठक के लिये तो बहुमूल्य सिद्ध होगी ही, साहित्य के गम्भीर विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिये यह ऐसी सामग्री सम्पन्न है जो कहीं दूसरी जगह उपलब्ध नहीं।

रीतिकाव्य संग्रह और काव्यांग-परिचय

(बिहारी ■ घनानंद भूषण)

हिन्दी विभाग

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पृष्ठ : 132 प्रथम संस्करण : 2010 ई०

अजि. : रु० 35.00 ISBN : 978-81-7124-759-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी साहित्य का रीतिकाल कविता के कलात्मक उत्कर्ष का काल था। इस काल में मुख्य रूप से सामंती अभिरुचि का पोषण करने वाली कविताएँ लिखी गयीं, इसलिए कवि-कर्म का उद्देश्य किसी महान आदर्श की स्थापना न होकर राजाओं-सामंतों का मनोरंजन करना ही था। कवियों का ध्यान कविता की अन्तर्वस्तु की गम्भीरता के बजाय रूप को निखारने-चमकाने और अलंकृत करने पर अधिक था। इसके बावजूद चूँकि हर युग की रचना में तत्कालीन युग जाने-अनजाने झलक ही जाता है, अत: रीतिकाल की कविताओं में भी तत्कालीन समाज यत्र-तत्र स्पन्दित होता हुआ दिखाई पड़ जाता है और कुछ कवि तत्कालीन जड़ता को तोड़ने में समर्थ होते हैं।

बिहारी, घनानंद और **भूषण** रीतिकाल के श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण कवि हैं। **बिहारी** ने जहाँ शृंगारिक कविता के अनेक आयाम प्रस्तुत किये, वहीं नीति और भक्ति के भी अच्छे दोहे लिखे जो आज के जीवन को भी प्रभावित करते हैं। **घनानंद** ने रीतिकालीन कविता की रूढ़ियों का अतिक्रमण करते हुए हृदय की आवाज को

अभिव्यक्ति दी और स्वच्छंद काव्यधारा प्रवाहित की। **भूषण** तत्कालीन पराधीनता से आहत थे और अपनी कविता के माध्यम से एक प्रकार की स्वाधीन चेतना को वाणी दे रहे थे। ये तीनों कवि अलग-अलग धाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमें विश्वास है कि यह संग्रह रीतिकालीन कविता को समझने में विद्यार्थियों और साहित्यप्रेमियों की मदद करेगा और उनका ज्ञानवर्धन करेगा।

आगामी प्रकाशन

सामलगमला

(कहानी-समग्र)

विवेकी राय

ग्रामांचलिक जीवन से सम्बन्धित कथा-साहित्य क्षेत्र के समर्पित मौलिक शैलीकार डॉ० विवेकी राय के कुल सात कहानी-संग्रहों का समग्र रूप में प्रकाशन निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति है। लगातार छः दशक तक कहानी साहित्य की समस्त पीढ़ियों और आन्दोलनों को आत्मसात करते हुए उक्त क्षेत्र में कलम चलाकर, ग्राम जीवन के यथार्थ को, उसके सुख-दुःख को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करके आपने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आपकी कहानियाँ अपने वृहत्तर रचनात्मक सरोकारों के साथ सम्पूर्ण भारत के स्वातंत्र्योत्तर गाँवों का साक्षात् कराती हैं। टुच्ची राजनीति और विकास के खोखले दावों से दो-दो हाथ करते दिखाई देते डॉ० राय प्रेमचंद और फणीश्वरनाथ रेणु के बाद गाँव की पृष्ठभूमि पर लिखने वाली पीढ़ी के सबसे सशक्त कथाकारों की श्रेणी में शिखरस्थ हैं। ग्राम्यांचल, कृषि-संस्कृति और अध्यापक-जीवन के विभिन्न अनुभवों की झाँकियों से संपृक्त इन कहानियों में आपने अपने अन्दर के प्रौढ़ भाषाविद् व कुशल कथा-लेखक को जमकर खटाया है,जिससे ये कहानियाँ नये सन्दर्भों के साथ अपनी अर्थवत्ता को ग्रहण कर सकी हैं। इस समग्र से हिन्दी कथा-साहित्य का पाठक उनके समृद्ध कहानीकार रूप से परिचित हो सकेगा, ऐसा विश्वास है।

भक्ति-काव्यधारा

(कबीर ▪ जायसी ▪ सूरदास ▪ तुलसीदास)

सम्पादन

हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति-साहित्य अप्रतिम है। भक्तिकाल में भाव-जगत के विस्तार और अनुभूति की गहराई के साथ ही कविता को कलात्मक उत्कर्ष भी प्राप्त हुआ। इसीलिए भक्तिकाल को स्वर्णकाल कहा गया। राजनीतिक उथल-पुथल और सामाजिक विशृंखलता तथा घोर वैषम्य के उस काल में सन्त और भक्त कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से भक्ति, प्रेम, बन्धुत्व, समानता और मानवता का सन्देश दिया। दक्षिण से लेकर समूचे उत्तर भारत तक फैले इस भक्ति आन्दोलन ने सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आन्दोलन का रूप ले लिया था। भक्ति आन्दोलन ने बड़े स्तर पर जन जागरण का कार्य किया। मूलत: धार्मिक आन्दोलन होने के बावजूद इस काल के कवियों ने सामाजिक समस्याओं, रूढ़ियों, कुप्रथाओं और आर्थिक विषमताओं-विपन्नताओं का भी बहुत प्रामाणिक और प्रभावशाली चित्रण किया। ये कविताएँ लोक और परलोक दोनों का स्पर्श करती हैं।

कबीर, जायसी, सूर और तुलसी इस युग के श्रेष्ठ और प्रतिनिधि कवि थे। कबीर ने भक्ति-भावना के साथ ही सामाजिक-चेतना-सम्पन्न क्रान्तिकारी कविताएँ भी लिखीं। उन्होंने करघे पर रामनाम की झीनी-झीनी चदरिया तो बुनी ही, समाज का भी एक नया ताना-बाना बुनने का प्रयास किया। जायसी ने प्रेम को सर्वोपरि माना और 'रकत की लेई' से टूट रहे समाज को जोड़ने का अनूठा कार्य किया। सूरदास ने भी प्रेम को सर्वोच्च महत्त्व देते हुए भक्ति की पवित्र और सरस-सुगम धारा प्रवाहित की। तुलसीदास ने अपनी श्रेष्ठ रचनाओं के माध्यम से समाज में शील, शक्ति और मर्यादा का आदर्श स्थापित किया। उनका 'रामचरित मानस' एक जीवित ग्रन्थ है और भारतीय जीवन में लगातार प्रभावशाली हस्तक्षेप कर रहा है। इन समस्त कवियों की कविताएँ हमारी अमूल्य धरोहर हैं और इस श्रेष्ठ विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाना हमारा उत्तरदायित्व है। इस पुस्तक में संकलित कवियों की चयनित कविताओं के साथ ही उन पर विस्तृत मूल्यांकनपरक आलेख भी दिये जा रहे हैं। जिनसे उनके अध्ययन में सुविधा होगी। इस पुस्तक के लेखन में जिन विद्वानों की पुस्तकों-आलेखों से हमें मदद मिली है, हम उनके कृतज्ञ हैं।

शिक्षण-अधिगम की तकनालॉजी

प्रो० के०पी० पाण्डेय

हम आमतौर पर परिवार में अपने माता-पिता एवं भाई-बहनों के अलावा पड़ोस के लोगों से तथा विद्यालय में अपने साथियों के सम्पर्क में बहुत सी बातें सीख लेते हैं। इसे शिक्षण के प्रासंगिक यानी **इनफार्मल** स्वरूप के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार की शिक्षण व्यवस्था में पूर्व नियोजन एवं किसी ठोस संगठनात्मक रूपरेखा का अभाव होता है। दूसरी तरह की शिक्षण प्रक्रिया वह है जिसमें विधि एवं पूर्ण व्यवस्था द्वारा स्थापित संगठनों द्वारा सामाजिक लक्ष्य सिद्धि पर जोर देते हुए एक स्थान विशेष एवं समय की सीमा के अन्तर्गत विशेष रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति के माध्यम से छात्रों के ज्ञान, कौशल, सोचने के ढंगों, रुचियों तथा अभिवृत्तियों में पूर्व नियोजित रूप में तबदीली लाने की कोशिश की जाती है। इसे औपचारिक शिक्षण यानी **फार्मल टीचिंग** की संज्ञा दी जाती है। अब इधर चार दशकों से एक तीसरे प्रकार के शिक्षण की चर्चा प्राय: की जाती है जिसे अनौपचारिक, निरौपचारिक यानी **नॉन-फार्मल टीचिंग** का नाम दिया गया है। इसके उदाहरण हैं : पत्राचार या दूरवर्ती पाठ्यक्रमों तथा मुक्त विश्वविद्यालयों (ओपेन यूनिवर्सिटिज) द्वारा आयोजित शिक्षण अधिगम की व्यवस्थाएँ तथा रेडियो एवं दूरदर्शन के कार्यक्रमों के माध्यम से दी जाने वाली नई जानकारियाँ तथा जन साधारण के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए किये जाने वाले प्रयास।

स्पष्ट है कि इन तीनों प्रकार की परिस्थितियों में शिक्षण (टीचिंग) की धारणा परिवर्तित हो जाती है क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले चरों (variables), उसके उद्देश्यों एवं तन्त्रों में बुनियादी तौर पर अन्तर होता है। इस प्रकार परिवार तथा प्रासंगिक सन्दर्भों, विद्यालय एवं कक्षा की औपचारिक परिस्थितियों तथा अनौपचारिक शिक्षा के परिवेश में भारी अन्तर देखा जा सकता है। इस परिपेक्ष्य को सामने रखकर यह पुस्तक प्रस्तुत की जा रही है। इसके रचयिता हैं प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं शिक्षा के क्षेत्र में कई दशकों से गहन अध्ययन, अध्यापन करने वाले, प्रशिक्षण देने वाले प्रो० के०पी० पाण्डेय।

गोदान : कुछ सन्दर्भ

डॉ० कमलेश कुमार गुप्त

'गोदान' स्वतंत्रता पूर्व भारतीय ग्रामीण जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है। गोदान के अध्ययन से हम उस समय के ग्रामीण जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक दशा से बहुत कुछ परिचित हो सकते हैं। प्रेमचन्द संस्कारत: एक भारतीय ग्रामीण किसान थे। गाँव में न केवल वे जन्मे, पले-बढ़े बल्कि आजीवन वे उससे घनिष्ठतापूर्वक जुड़े रहे। ग्रामीण जीवन से घनिष्ठ परिचय और आत्मीयता के कारण ही वे उसका सजीव चित्रण कर पाने में सफल हुए हैं। डॉ० रामविलास शर्मा ने ठीक ही लिखा है ''प्रेमचन्द ने 'गोदान' में गाँवों की प्रकृति, वहाँ के किसानों और उनके जीवन के बारे में ऐसे प्रेम से लिखा है मानो ये अब बिछुड़ने वाले हों और वह अब इन्हें बार-बार न देख पायेंगे। 'गोदान' के वर्णन और चित्रण में एक अपूर्व आत्मीयता और तल्लीनता है जो प्रेमचन्द के उपन्यासों में भी कम मिलती है।''

ग्रामीण जीवन के बाहरी रूप के यथार्थ चित्रण के लिए प्रेमचन्द ने गाँवों के भौगोलिक-प्राकृतिक परिवेश का हू-ब-हू चित्रण किया है। उन्होंने ग्रामवासियों के घर-द्वार, खेत-खलिहान, आँगन-बैठका आदि का सजीव वर्णन किया है।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

महाराणा राजसिंह और औरंगज़ेब, लेखक : राजेन्द्र शंकर भट्ट, प्रकाशक : राजस्थानी ग्रन्थागार, सोजतीगेट, जोधपुर-342001 (राजस्थान), संस्करण : प्रथम (2010), मूल्य : 500/-रु० मात्र

× × × भारतीय इतिहास के मध्यकालीन आक्रमणों का प्रतिरोध राजस्थान ने जिस तरह किया वह वीरता और बलिदान की अद्‌भुत स्वातंत्र्य-गाथा बन गया। मेवाड़ के महाराणा कुंभा, राणासांगा, राणा उदय सिंह, राणाप्रताप सिंह की गौरवशाली परम्परा के लेखक राजेन्द्र शंकर भट्ट ने इसी परम्परा की कड़ी राणा राजसिंह और मुगल शहंशाह औरंगज़ेब के राजकीय-सम्बन्धों, परम्परा-पालन के आग्रहों, धार्मिक-अंतर्विरोधों और युद्ध एवं संधि का सम्यक् आकलन प्रस्तुत किया है। इस समग्र इतिहास-लेखन के लिये उपलब्ध प्रमाणों, राजकीय बहीखातों, दस्तावेज़ों, कर्नल टॉड के इतिहास आदि के साथ अन्य स्रोतों—वीर-विनोद, राज प्रशस्ति जैसे काव्यों, लोकगीतों, किंवदंतियों, आदि का भी यथा स्थान उपयोग किया गया है जो इस इतिहास-लेखन को प्रामाणिकता प्रदान करता है। राजनीतिक-सांस्कृतिक-धार्मिक अंतर्विरोधों से भरे भारतीय इतिहास के मध्यकाल में राजस्थान का यह प्रतिरोध-संघर्ष आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

स्व० पण्डित बलदेव प्रसाद मिश्र : जन्मशती स्मारिका, सम्पादन : अजय मिश्र, प्रकाशक : आर्यभाषा संस्थान, बी० 2/143 ए, भदैनी, वाराणसी-221001, संस्करण : प्रथम (2010), मूल्य 20/-रु० मात्र

× × × प्रसाद-प्रेमचंद युग के लब्धप्रतिष्ठ कवि, कथाकार, समीक्षक, सम्पादक स्व० पं० बलदेवप्रसाद मिश्र की जन्मशती के अवसर पर प्रकाशित यह स्मारिका साहित्येतिहास की स्मृति-विस्मृति के बीच एक समग्र साहित्य-व्यक्तित्व का अन्तः परिचय देने के साथ उनकी रचनाओं से भी परिचित कराती है। यह इस स्मारिका की सम्पादनगत विशिष्टता है। ऐसे शताब्द साहित्य-साधकों ने ही हिन्दी-भाषा और साहित्य के सारस्वत-महायज्ञ में आत्म-आहुति दी है, पण्डितजी के कृति-व्यक्तित्व को हमारा नमन्!

इस अ-कवि समय में, कवि : संतोष चौबे, प्रकाशक : मेधा बुक्स, एक्स-11, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032, संस्करण : प्रथम (2010), मूल्य : 150/-रु० मात्र

× × × कवि-कथाकार-उपन्यासकार संतोष चौबे के इस संग्रह में प्रस्तुत कविताओं पर सुरेश पण्डित की यह टिप्पणी समग्र कवि कर्म को बयाँ करती है कि "ये कविताएँ एक ओर जहाँ मनुष्य को मनुष्य बनाये रखने के लिए आवश्यक मूल्यों को बचाये रखने की जद्दोजहद करती दिखाई देती हैं वहीं विकास के नाम पर होने वाले उत्पीड़न का विरोध और इससे फायदा उठाने वाले लोकोपकारकों के बनावटी नकाब उतारती प्रतीत होती हैं। अपने समय को समझने के लिये इन्हें बार-बार पढ़ा जाना चाहिए।"

तनाव (साहित्य-पत्रिका), सम्पादक एवं प्रकाशक : वंशी माहेश्वरी, 57, मंगवारा, पिपरिया-461775 (म०प्र०), मूल्य : एक प्रति 10/-रु० मात्र

× × × साहित्य की पत्रिका 'तनाव' के अंक 112 एवं 113 में क्रमशः फिनिशियन कवि किरथ्री कुन्नास की कविताओं का मोहम्मद सईद शेख द्वारा किया गया अनुवाद और दिनेश्वर प्रसाद द्वारा अंग्रेजी कवि वाल्ट ह्विटमैन की कविताओं का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी-भाषा-साहित्य की समृद्धि और हिन्दी के पाठकों को महत्त्वपूर्ण विदेशी कवियों से परिचित कराने का श्रेय 'तनाव' के इस आयोजन को मिलना चाहिए। दोनों ही अनुवाद हिन्दी में होकर भी अपनी मूल पृष्ठभूमि और उसकी सम्वेदना को व्यक्त करने में सक्षम हैं।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 अगस्त 2010 अंक : 8

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक
स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11
RNI No. UPHIN/2000/10104
प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)